A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 22 अप्रैल, 2025
भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 22, अंक 222, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्या राज और उद्धव ठाकरे सचमुच एक साथ आ सकेंगे?

ओमकार करमबेलकर

शिवसेना के इतिहास में विद्रोह और विभाजन के कई उदाहरण हैं। जब छगन भुजबल और नारायण राणे जैसे अग्रणी नेताओं ने शिवसेना छोड़ दी थी, तो कुछ समय के लिए पार्टी में अशांति फैल गई थी। तीन साल पहले एकनाथ शिंदे के विद्रोह के कारण शिवसेना में एक बार फिर विभाजन हो गया था। लेकिन, अतीत में हुए एक विद्रोह ने शिवसेना में भावनात्मक तूफ़ान पैदा कर दिया था, वह विद्रोह था राज ठाकरे का। महाराष्ट्र की राजनीति में लगातार ये चर्चा रही है कि राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे किसी न किसी समय एक साथ आएंगे। बीते दिनों दोनों तरफ के नेता, कार्यकर्ता और उनके आसपास के रिश्तेदारों के बयानों से, ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि दोनों नेता साथ आ सकते हैं। हालाँकि, यह पहली बार है जब दोनों नेताओं ने इस मामले पर खुलकर टिप्पणी की है। लेकिन सवाल ये उठ रहा है कि क्या दोनों सचमुच एक साथ आएंगे? अगर वे साथ आएंगे, तो क्या गठबंधन बनाएंगे या फिर एक ही संगठन में रहकर लड़ेंगे? क्या आगामी नगर निगम चुनावों में दोनों एक-दूसरे की मदद करेंगे?

19 अप्रैल को इन दोनों नेताओं के एक साथ आने की चर्चा फिर से शुरू होने का कारण दोनों नेताओं के दिए बयान हैं। राज ठाकरे ने अभिनेता और फ़िल्म निर्देशक महेश मांजरेकर के यूट्यूब चैनल को दिए एक इंटरव्यू में कहा किसी भी बड़ी बात के लिए, हमारे विवाद और झगड़े बहुत छोटे और मामूली हैं। महाराष्ट्र बहुत बड़ा है। इस महाराष्ट्र और मराठी लोगों के अस्तित्व के लिए, ये विवाद और झगड़े बहुत महत्वहीन हैं। इस वजह से, मुझे नहीं लगता कि एक साथ आना और एक साथ रहना बहुत मुश्किल है। लेकिन, यह केवल मेरी इच्छा का मामला नहीं है। हमें महाराष्ट्र की पूरी तस्वीर को देखना होगा। सभी पार्टियों के मराठी लोगों को एक साथ आकर एक पार्टी बनानी चाहिए।

उद्धव ठाकरे ने भी इस बयान पर तुरंत और सकारात्मक परंतु सशर्त प्रतिक्रिया दी। उद्धव ने कहा, मैं छोटे-मोटे झगड़ों को किनारे रखने को तैयार हूं। मैं सभी मराठी लोगों से महाराष्ट्र की भलाई के लिए एकजुट होने की अपील करता हूं। लेकिन, एक तरफ उनका (बीजेपी का) समर्थन करना और बाद में समझौता करना और उनका विरोध करना, इससे काम नहीं चलेगा। मराठी लोगों को यह तय करना चाहिए कि हिंदुत्व के हित में मेरे साथ रहना है या बीजेपी के साथ।'

राज ठाकरे ने शिवसेना छोड़ते वक्त कहा था कि उन्हें 'विट्ठल' से कोई शिकायत नहीं है, बल्कि उनके आसपास मौजूद बुरे लोगों से शिकायत है। यहां विट्ठल से उनका आशय तत्कालीन शिवसेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे से था। इसके बाद, राज ठाकरे ने महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) का गठन किया। अपने शुरुआती वर्षों में शिवसेना की तरह, मनसे ने भी मराठी भाषा का मुद्दा, मराठी बोर्ड का मुद्दा आदि जैसे मुद्दों को उठाकर सफलता हासिल की। 2009 के विधानसभा चुनावों में 13 मनसे विधायक चुने गए और मनसे-बीजेपी गठबंधन को लोकसभा में भी झटका लगा।

इसके बाद हुए लोकसभा चुनाव के दौरान ही शिवसेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे का निधन हो गया। उद्धव और राज ठाकरे अपने-अपने संगठन का प्रबंधन करते रहे हैं। चुनाव के दौरान भी वे एक-दूसरे पर सीधे हमले करते रहे। दोनों के एक साथ आने का मुद्दा परिवार, पार्टी, ईर्ष्या, आरोप-प्रत्यारोप, राजनीतिक संगठन और भावनाओं के चक्र में घूमता रहा।

इस दौरान जो सबसे महत्वपूर्ण बात हुई, वह यह थी कि दोनों भाई कुछ समय के लिए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार के क़रीब आ गए। 2019 के लोकसभा चुनाव में शिवसेना-बीजेपी गठबंधन शरद पवार की पार्टी के ख़िलाफ़ लड़ रहा था। उद्धव ठाकरे ने चुनाव प्रचार के दौरान शरद पवार पर हमला किया था, जबकि राज ठाकरे, शरद पवार के क़रीबी हो गए थे। इस चुनाव में बीजेपी के ख़िलाफ़ आक्रामक प्रचार में शरद पवार, असदउद्दीन ओवैसी, छगन भुजबल और राज ठाकरे ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। हालांकि, नतीजों के बाद शरद पवार और राज ठाकरे के बीच नजदीकियां ज़्यादा दिन तक नहीं रहीं।

मराठी मुद्दे के साथ-साथ राज ठाकरे ने अचानक हिंदुत्व का मुद्दा भी उठा लिया। बालासाहेब ठाकरे की तरह भगवा शॉल पहने हुए उनकी तस्वीरें भी अख़बारों में प्रकाशित हुईं। इस वर्ष विधानसभा चुनाव में एक-दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ने वाली कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और शिवसेना चुनाव परिणाम के बाद एक साथ आ गईं। तीन साल पहले एकनाथ शिंदे और उनके साथ कई पार्टी नेताओं ने शिवसेना छोड़कर, बीजेपी के साथ सरकार बनाई। इस घटना के बाद संगठन में काफी हलचल मची थी। इस दौरान भी एकनाथ शिंदे और मनसे के बीच रिश्ते अच्छे बने रहे। इसी सप्ताह एकनाथ शिंदे के साथ घूमने गए उदय सामंत कभी राज ठाकरे से मिलते रहे हैं, तो कभी दादा भुसे राज ठाकरे के घर जाते रहे हैं। चर्चा है कि एकनाथ शिंदे और मनसे नगर निगम चुनाव में एक साथ उतर सकते हैं। हालाँकि, उद्धव ठाकरे ने एकनाथ शिंदे के ख़िलाफ़ तलवार को और अधिक धार देने का फ़ैसला किया है।

भले ही राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे ने बीते दिनों साथ आने को लेकर सकारात्मक बयान दिए हों, लेकिन पिछले 20 वर्षों में बहुत पानी बह चुका है। इस बीच, दोनों के संगठनों के बीच कटु आलोचना और संघर्ष जारी रहा है। दोनो नेताओं के बेटे 2024 का विधानसभा चुनाव लड़ रहे थे। दोनों के निर्वाचन क्षेत्र भी पास-पास ही थे। वर्ली निर्वाचन क्षेत्र में आदित्य ठाकरे को मनसे के संदीप देशपांडे ने कड़ी चुनौती दी, लेकिन आदित्य जीत गए। माहिम निर्वाचन क्षेत्र में अमित ठाकरे को शिवसेना (यूबीटी गुट) के महेश सावंत ने हराया। लेकिन क्या ये नेता चुनाव लड़ने के बाद अपने घर तक एक साथ आ पाएंगे? ये सवाल अभी भी कायम है।

मनसे नेता और पूर्व नगरसेवक संदीप देशपांडे ने कहा कि 2017 के नगर निगम चुनावों के अनुभव को देखते हुए यह असंभव लगता है। किसी को भी गठबंधन का प्रस्ताव नहीं दिया गया है। इस बीच, एकनाथ शिंदे के क़रीबी नेता उदय सामंत ने राज ठाकरे को लेकर राय व्यक्त की। उनके राजनीतिक स्वभाव को देखते हुए मुझे नहीं लगता कि वह किसी की शर्तों के अधीन निर्णय लेंगे। वह स्वतंत्र सोच रखते हैं।

राज्यसभा सांसद संजय राउत ने कहा कि ' वे ठाकरे नाम को ख़त्म करना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में यदि दोनों ठाकरे ने प्रतिक्रिया दी है तो महाराष्ट्र इसका स्वागत करेगा। लेकिन, हम इंतज़ार करेंगे और देखेंगे कि अब क्या होता है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

वैशाख! आ रहे हो

तो इस बार वैसे मत आओ
जैसे आते रहे हो हमेशा चैत के बाद,
इस बार आओ
तो धूप की प्यालियों में
जीवन की मदिरा भर कर लाओ।
आओ, तो ऐसे आओ
कि शगुन होने लगे,
अनिष्ट की शंकाएँ टूटे किसी तरह।
वैशाख! आ रहे हो
तो बुद्ध की करुणा ले कर आना,
सशस्त्र जामदग्न्य को भी ले आना
कि वे एक-एक विषाणु को बुझा डाले यहाँ।
चाँदी की परत से ढँक जाये धरती,
अमलतास की तरह
झूमने लगे आदमी का मन।
वैशाख! आ रहे हो
तो बहुत सावधान हो कर आना,
बस्तियों में ग्लानि है, वैमनस्य है,
प्रमाद है, फीकापन है,
सब देख रहे हैं तुम्हें
चमकीले वस्त्र पहन कर
वीर योद्धा की तरह आते हुए।
आओ, तो उखाड़ फेंकना
भय के वे सब स्मारक
जो खड़े हुए चतुष्पथों पर।
वैशाख! आ रहे हो
तो नया उत्साह ले आना,
नयी उमंग भर देना
आँखों की इन पुतलियों में।
फिर शहनाई बजे,
फिर स्वस्तिपाठ हो।

मुरलीधर चांदनीवाला

चुनाव में गड़बड़ी साफ दिख रही, ईसी ने किया समझौता

- राहुल अमेरिका में बोले-महाराष्ट्र चुनाव पर उठाया सवाल
- कहा-शाम 5.30 से 7.30 के बीच 65 लाख वोट कैसे पड़े

बोस्टन (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने अमेरिका के बॉस्टन में महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव पर सवाल उठाए। उन्होंने रविवार शाम भारतीय प्रवासियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह साफ है कि भारतीय चुनाव आयोग समझौता कर चुका है। इस सिस्टम में कुछ गड़बड़ी है। राहुल 2 दिन के अमेरिका दौरे पर हैं। राहुल गांधी शनिवार देर रात को

अमेरिका के बॉस्टन एयरपोर्ट पर उतरे थे। वे यहां रोड आईलैंड स्थित ब्राउन यूनिवर्सिटी का दौरा करेंगे, जहां वे फैकल्टी और छात्रों से बातचीत करेंगे। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने राहुल गांधी के इस दौरे की जानकारी एक्स पर दी थी। राहुल बोले- मैं कई बार कह चुका हूं कि महाराष्ट्र में जितने बालिग नहीं हैं, उससे ज्यादा वोटिंग हुई। चुनाव आयोग ने हमें साढ़े पांच बजे वोटिंग का आंकड़ा बताया। इसके बाद 5.30 से शाम 7.30 के बीच 65 लाख वोटिंग हुई।

जल गंगा संवर्धन अभियान

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने उज्जैन में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत रामघाट की सफाई और माँ क्षिप्रा में स्नान के बाद दुग्ध अभिषेक कर पूजा-अर्चना की।

उज्जैन कुंभ में शिप्रा नदी पर जल मार्ग बनेगाः सीएम

- श्रद्धालु नाव से आना-जाना कर सकेंगे, 29 किमी के नए घाट भी तैयार होंगे
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने माँ क्षिप्रा के घाटों की सफाई कर जल गंगा संवर्धन अभियान में सहभागिता की

भोपाल/उज्जैन (नप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान-मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन क्षिप्रा के रामघाट पर जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत घाटों की सफाई की मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने क्षिप्रा नदी में उतरकर घाटों की सफाई की। उन्होंने सफाई के बाद क्षिप्रा में स्नान किया। उन्होंने माँ क्षिप्रा का पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान हमारे प्रदेश के पुराने ऐतिहासिक जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने का विशेष अभियान है। इसमें नदियों को पुनः प्रवहमान बनने के लिए भी कार्य किया जा रहा है। भोपाल के पास बेतवा नदी के उद्गम स्थल को पुनर्जीवित कर दिया गया है, इस अभियान की यह विशेषता है कि हम अपनी ऐतिहासिक, पुरानी बावड़ी, कुएँ, तालाब, जल स्त्रोत को पुनर्जीवित कर रहे है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में और पूरे विश्व में हमारे मध्यप्रदेश की माँ नर्मदा ऐसी नदी है जिसकी परिक्रमा की जाती है, मध्यप्रदेश सरकार नर्मदा नदी के परिक्रमा स्थल को सुव्यवस्थित कर तीर्थ यात्रियों के लिए सुविधाजनक व्यवस्थाएं बनाएंगे और माँ क्षिप्रा के घाटों को 29 किलोमीटर और बनाया जा रहा है, जिससे माँ क्षिप्रा के परिक्रमा करने वाले यात्रियों को भी सुविधा होगी।

उज्जैन में माँ क्षिप्रा को प्रवहमान बनाने के लिए सिलारखेड़ी सेवरखेड़ी जलाशय योजना, माँ क्षिप्रा की स्वच्छता बनाए रखने के लिए खान डायवर्सन नदी परियोजना भी चल रही है। इसका 50त्न काम लगभग पूरा हो चुका है, आने वाले 2 वर्षों में माँ क्षिप्रा कल-कल होकर बहेगी, इसी संकल्प के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने उज्जैन के रामघाट पर जल गंगा संवर्धन अभियान में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने रामघाट पर सफाई की। साथ ही शिप्रा में डुबकी भी लगाई। सीएम ने रामघाट पर सफाईकर्मियों और पंचकोशी यात्रियों का स्वागत करते हुए कहा कि आने वाले कुम्भ में उज्जैन में शिप्रा नदी के अलग-अलग भागों में

10 फीट गहरी खाई में गिरी टेम्पो-ट्रैक्स, 6 की मौत

रायसेन में ड्राइवर को झपकी लगने से पुलिया से टकराई, दूल्हा-दुल्हन समेत 3 घायल

रायसेन (नप्र)। रायसेन में भोपाल-जबलपुर रोड पर सड़क हादसे में 6 लोगों की मौत हो गई। घटना बम्होरी ढाबे के पास बंदर वाली पुलिया के पास सोमवार सुबह 6.30 से 7 बजे के बीच की है।

टेम्पो ट्रैक्स (तूफान) पहले पुलिया से टकराई, इसके बाद 10 फीट गहरी खाई में गिर गई। हादसे में दूल्हा-दुल्हन समेत 3 लोग गंभीर रूप से घायल हैं। गाड़ी में कुल 9 लोग सवार थे।

एसपी पंकज कुमार पांडेय के मुताबिक हादसे में दो महिलाओं, एक बच्ची और तीन पुरुषों की मौके पर ही मौत हो गई। शुरुआती जांच में सामने आया है कि ड्राइवर को नींद आने के कारण यह हादसा हुआ।

बाड़ी एसडीओपी अदिति सक्सेना ने बताया कि गाड़ी जबलपुर से इंदौर की ओर जा रही थी। परिवार शादी करवा कर बिहार के सुपौल जिले से लौट रहा था।

घायलों में दूल्हा- दुल्हन भी शामिल

घायलों में शामिल दीपक चोपड़ा दूल्हा है और संगीता दुल्हन है। दोनों परिवार बिहार के सुपौल जिले से शादी कर लौट रहे थे। दीपक इंदौर के चंदन नगर का रहने वाला है। घायल दूल्हा-दुल्हन और दूल्हे के जीजा को रायसेन जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। फिर यहां से भोपाल के हमीदिया अस्पताल रेफर कर दिया गया। परिजन भी इंदौर से हमीदिया अस्पताल रवाना हुए हैं। ड्राइवर भी इंदौर का निवासी है जबकि दूल्हे के अन्य परिजन राजस्थान के रहने वाले हैं। रायसेन कलेक्टर अरुण कुमार विश्वकर्मा, एसपी पंकज कुमार पाण्डेय ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया। कलेक्टर विश्वकर्मा ने कहा- घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया है। शासन की तरफ से जो मदद मिलेगी, घायलों को दी जाएगी।

ढाबा मालिक अमरीक सबसे पहले पहुंचे

जिस जगह हादसा हुआ, वहां से कुछ दूरी पर ढाबा चलाने वाले अमरीक सिंह बबल सबसे पहले मौके पर पहुंचे थे। उन्होंने बताया- गाड़ी पुलिया से नीचे पड़ी थी। उसके नीचे लोग दबे थे। मैंने वहां पहुंचकर घायलों को निकालना शुरू किया। मंजर देखकर मेरे हाथ-पैर कांप गए। गाड़ी में फंसे लोगों को बाहर निकालने के बाद पुलिस को सूचना दी।

पति को पत्नी ने मार डाला, प्रेमी के साथ शव को दो टुकड़ों में काटा...

सूटकेस में भरकर फेंका, देवरिया में मेरठ जैसी वारदात

देवरिया (एजेंसी)। यूपी के देवरिया में मेरठ के सौरभ हत्याकांड जैसी वारदात हुई। यहां दुबई से लौटे पति की पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर हत्या कर दी। शव को दो टुकड़ों में काटकर ट्रॉली बैग में भर दिया। इसके बाद सूटकेस को घर से 55 किमी दूर फेंक दिया। रविवार सुबह तरकुलवा क्षेत्र में किसान ने खेत में ट्रॉली बैग देखकर पुलिस को सूचना दी। पुलिस पहुंची तो सूटकेस के अंदर शव मिला। पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की, लेकिन शव की शिनाख्त नहीं हो पाई। हालांकि, पत्नी ने एक गलती कर दी थी। उसने पति को उसी ट्रॉली बैग में भरा,

जिसे वह दुबई से लेकर आया था। ट्रॉली बैग में एयरपोर्ट का बार कोड लगा था। उससे शव की पहचान नौशाद अहमद (38) पुत्र मन्नू अहमद के तौर पर हुई। पुलिस नौशाद के घर मईल थाना क्षेत्र के भटौली गांव पहुंची, तो पत्नी राजिया ने पति के लापता होने की कहानी सुनाई। वह खुद जोर-जोर से रोने लगी। लेकिन, जैसे ही पुलिस ने घर के अंदर तलाशी ली तो पूरी तस्वीर साफ हो गई। कई जगह खून के निशान मिले।पुलिस ने राजिया को हिरासत में ले लिया। सख्ती की गई तो वह टूट गई। प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या की बात कबूल कर ली। पत्नी ने बताया कि उसका भांजे रुमान के साथ संबंध है। पति उन दोनों के बीच बाधा बन रहा था। इसलिए भांजे के साथ मिलकर पति को मार डाला। आरोपी भांजा रुमान फरार है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c

न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 22 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पोप फ्रांसिस का 88 साल की उम्र में निधन

● वेटिकन ने की आधिकारिक घोषणा

ईस्टर के एक दिन बाद ली अंतिम सांस

वेटिकन सिटी (एजेंसी)। पोप फ्रांसिस का सोमवार को निधन हो गया है। वेटिकन के कैमर्लेंगो कार्डिनल केविन फेरेल ने बताया है कि पोप फ्रांसिस ने रोम के समय के हिसाब से सोमवार सुबह 7.35 बजे अंतिम सांस ली। वह 88 वर्ष के थे और लंबे समय से बीमार चल रहे थे। फेरेल ने अपने बयान में कहा कि पोप फ्रांसिस का पूरा जीवन गॉड और चर्च की सेवा में समर्पित रहा। उन्होंने लोगों को हमेशा प्रेम और साहस के साथ जीने का पाठ पढ़ाया। पोप फ्रांसिस के निधन के बाद

अब नए पोप का चुनाव किया जाएगा। कार्डिनल मिलकर नए पोप का चुनाव करेंगे। पोप फ्रांसिस का जन्म 17 दिसंबर 1936 को अर्जेंटीना के ब्यूनस आयर्स में हुआ था। उनका असली नाम जॉर्ज मारियो बर्गोग्लियो था। उन्होंने 13 मार्च 2013 को पोप का पद संभाला था, जो रोमन कैथोलिक चर्च का सर्वोच्च धर्म गुरु का पद है। रोम के बिशप और वैटिकन के राज्याध्यक्ष को पोप कहा जाता है।

चिराग का सियासी धमाल टेंशन में होंगे नीतिश

● बिहार चुनाव में फिर बवाल काटेंगे मोदी के हनुमान!

पटना (एजेंसी)। लोजपा (आर) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान एक बार फिर चर्चा में हैं। उनका अंदाज भले ही नया हो, लेकिन लक्ष्य पुराना है। 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में उन्होंने जदयू के खिलाफ उम्मीदवार उतारकर नीतीश कुमार के कद को छोटा किया था। अब उनके बदले

हुए तेवर से जेडीयू को फिर से खतरे में डालते दिख रहे हैं। चिराग पासवान की असली मंशा क्या है, यह एक बड़ा सवाल है। दरअसल, चिराग पासवान ने एक बयान दिया था, जिससे यह धमाल मचा हुआ है। उन्होंने कहा था कि बिहार मुझे बुला रहा है। मेरा राजनीति में आने का कारण ही बिहार और बिहारी रहा है। सांसद बनने से ज्यादा महत्वपूर्ण मेरे लिए एक विधायक की भूमिका होगी, जहां मैं अपने राज्य के लिए ज्यादा कार्य कर सकूं। इस बयान के बाद यह अटकलें लगाई जा रही हैं कि चिराग मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। यह भी कहा जा रहा है कि वह इसके लिए अन्य दलों से गठबंधन करके चुनाव में तीसरा कोण बनाएंगे। लेकिन सच्चाई कुछ और ही है।

भोपाल में LDC भर्ती परीक्षा से साल्वर गिरफ्तार

भोपाल(नप्र)।भोपाल के बंगरसिया स्थित सेंट्रल स्कूल में रविवार को सीबीएसई की ओर से एलडीसी पद पर भर्ती परीक्षा आयोजित की गई थी। जहां एक सालवर को पकड़कर पुलिस के हवाले किया गया है। आरोपी दूसरे के स्थान पर परीक्षा देने आया था। फिंगरप्रिंट मिसमैच होने के बाद चेकिंग स्टाफ की नजर में आया। तत्काल उसे पुलिस के हवाले किया गया। सोमवार को पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है। टीआई मनीष राज सिंह भदौरिया ने बताया कि आरोपी सोनू यादव पटना बिहार का रहने वाला है। वह बबलेश मीणा निवासी दौसा राजस्थान के स्थान पर सीबीएसई की एलडीसी परीक्षा देने आया था। सेंट्रल स्कूल बंगरसिया में आयोजित इस परीक्षा में प्रवेश से पहले उसकी तस्दीक की गई। बायोमैट्रिक्स में फिंगर लगाने का कहा तो आरोपी बहानेबाजी करने लगा।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति वेंस ने परिवार संग देखा अक्षरधाम मंदिर

● शाम को पीएम मोदी ने किया डिनर होस्ट, 4 दिन के भारत दौरे पर हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस सोमवार को पत्नी उषा, बच्चों इवान, विवेक और मीराबेल के साथ दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर गए। वे वहां करीब 1 घंटे रुके। उपराष्ट्रपति बनने के बाद यह जेडी वेंस का पहला आधिकारिक भारत दौरा है। वे 4 दिन भारत में रहेंगे। वेंस का प्लेन सुबह 9.45 बजे दिल्ली के पालम एयरपोर्ट पर उतरा। यहां केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने उन्हें रिसीव किया। एयरपोर्ट पर ही उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। वेंस, उनकी पत्नी और बच्चों के

सामने कलाकारों ने पारंपरिक नृत्य पेश किया। प्रधानमंत्री मोदी ने शाम को वेंस और उनके परिवार के लिए डिनर होस्ट किया। वेंस ने विदेश मंत्री एस जयशंकर, एनएसए अजित डोभाल, विदेश सचिव विक्रम मिस्री और अमेरिका में भारतीय राजदूत विनय मोहन क्वात्रा से भी मुलाकात की। अक्षरधाम मंदिर देखने के बाद जेडी वेंस अपने परिवार के साथ दिल्ली के जनपथ स्थित सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज एम्पोरियम देखने के लिए गए। यहां पर भारतीय हस्तशिल्प के उत्पाद मिलते हैं।

उषा वेंसः आंध्र की बेटी, अमेरिका की हस्ती

उषा वेंस, जिनका जन्म उषा चिलुकुरी के नाम से हुआ, भारतीय मूल की एक प्रेरक शख्सियत हैं। उनका परिवार आंध्र प्रदेश के वडलुरू गांव से है। उनके दादाजी रामशास्त्री चिलुकुरी आईआईटी मद्रास में फिजिक्स के प्रोफेसर थे। उषा के माता-पिता, राधाकृष्ण कृष चिलुकुरी और लक्ष्मी चिलुकुरी, 1970 के दशक में अमेरिका चले गए। उनकी मां सैन डिएगो यूनिवर्सिटी में मॉलिक्यूलर बायोलॉजी की प्रोफेसर और प्रोवोस्ट हैं, जबकि पिता सैन डिएगो स्टेट यूनिवर्सिटी में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग पढ़ाते हैं। उषा और उनकी बहन श्रेया कैलीफोर्निया में धार्मिक माहौल में पली-बढ़ीं। उषा ने येल यूनिवर्सिटी से लॉ किया है।

2027 से पहले यूपी से दिल्ली तक सक्रिय हुआ आरएसएस

=यूपी चुनाव से पहले अखिलेश के पीडीए की भी खोज ली है काट!, बीजेपी के संगठन में बदलाव के संकेत,सामाजिक समरसता पर काम ,भागवत ने उत्तर प्रदेश में 'पंच परिवर्तन' पर कर लिया है फोकस

नई दिल्ली (एजेंसी)। 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को उत्तर प्रदेश में मिली कम सीटों के बाद लगता है आरएसएस 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी में अभी से जुट गया है। समाजवादी पार्टी के पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) समीकरण को टक्कर देने के लिए आरएसएस सामाजिक समरसता और वैचारिक रणनीति पर काम कर रहा है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने 'पंच परिवर्तन' की बात की है। इसका मतलब है समाज में पांच बुनियादी बदलाव लाना। आरएसएस बीजेपी के संगठन को मजबूत करने और सामाजिक समीकरणों को साधने में लगा रहा है। यूपी में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने स्वयंसेवकों को जो संदेश दिए हैं, उससे यही लगता है कि उसे अखिलेश यादव के पीडीए मॉडल की काट मिल गई है। 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में

बीजेपी को बड़ा झटका लगा था। समाजवादी पार्टी के पीडीए समीकरण ने बीजेपी को कड़ी टक्कर दी। सपा और उसके गठबंधन को 44 सीटें मिलीं।

'संघ' का सामाजिक समरसता वाला संदेश

मोहन भागवत ने 'एक कुआं, एक मंदिर, एक श्मशान' की बात दोहराई है। यह नारा उसी कोशिश का प्रतीक है, जो दलितों और पिछड़ों को हिंदू समाज के अंदर एकजुट करने की दिशा में जाती है। यह पहल सिर्फ सामाजिक नहीं है। बल्कि राजनीतिक भी है। क्योंकि इससे पीडीए जैसे समीकरणों को सामाजिक स्तर पर चुनौती मिल सकती है। दरअसल, आरएसएस संस्कृति के जरिए सामाजिक समरसता का संदेश देना चाहता है। भागवत ने साझा भोजन, सामूहिक त्योहार, और पारिवारिक हवन जैसे प्रतीकों के जरिए यह बताने की कोशिश की कि सांस्कृतिक जुड़ाव कैसे सामाजिक दूरियों को मिटा सकता है।

महाराष्ट्र में मराठी को प्राथमिकता हिंदी नहीं थोपी जाएगी: सीएम

● मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस बोले-भाषा सीखना है महत्वपूर्ण

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि हिंदी भाषा को राज्य पर थोपा नहीं जा रहा है। हमें यह समझने की जरूरत है कि मराठी के बजाय हिंदी को अनिवार्य नहीं बनाया गया है। मराठी भाषा अनिवार्य है। उन्होंने कहा- नई शिक्षा नीति में कहा गया है कि छात्रों को पढ़ाई जाने वाली तीन भाषाओं में से दो भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। नई शिक्षा नीति ने तीन भाषाएं सीखने का अवसर प्रदान किया है। भाषा सीखना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि नियम कहता है कि इन तीन भाषाओं में से दो भारतीय होनी चाहिए। मराठी को पहले से ही अनिवार्य किया जा रहा है। आप हिंदी, तमिल, मलयालम या गुजराती के अलावा कोई अन्य भाषा नहीं ले सकते।

मुर्शिदाबाद से लेकर अवमानना तक हुई 'सुप्रीम' सुनवाई

सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ता से पूछा- क्या हम राष्ट्रपति को आदेश दें

केंद्रीय बलों की तैनाती से इनकार, वकील के दावों पर भी उठाए सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू करने और पैरामिलिट्री फोर्स तैनात करने की याचिका सहि अवमानना के मामले पर कोई आदेश जारी करने से इनकार कर दिया। याचिकाकर्ता ने अपील की थी कि वक्फ कानून के विरोध में हुई मुर्शिदाबाद हिंसा के बाद कोर्ट इस पर फैसला ले। इस पर जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस एजी मसीह की बेंच ने कोई आदेश नहीं दिया। बेंच ने याचिकाकर्ता से पूछा- क्या आप चाहते हैं कि हम राष्ट्रपति को इसे लागू करने का आदेश भेजें। हम पर दूसरों के अधिकार क्षेत्र में दखलंदाजी के आरोप लग रहे हैं। जस्टिस गवई अगले महीने सीजेआई बनने वाले हैं।

अवमानना याचिका के लिए हमारी जरूरत नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे के खिलाफ दायर अवमानना की याचिका पर सुनवाई की। कोर्ट ने कहा- याचिका दायर करने के लिए कोर्ट की मंजूरी की जरूरत नहीं है। लेकिन इसके लिए अटॉर्नी जनरल से इजाजत लेनी होगी। याचिकाकर्ता ने अदालत से कहा था कि निशिकांत ने सीजेआई और न्यायपालिका का अपमान किया है। क्या वह निशिकांत के खिलाफ अवमानना की याचिका दायर कर सकता है। इसके बाद एडवोकेट अनस तनवीर ने अटॉर्नी जनरल को चिट्ठी लिखकर दुबे के खिलाफ अवमानना की इजाजत मांगी। दरअसल, भाजपा सांसद दुबे ने 19 अप्रैल को कहा था कि अगर सुप्रीम कोर्ट को ही कानून बनाने हैं तो संसद और विधानसभा को बंद कर देना चाहिए।

जस्टिस वर्मा बेंच के मुकदमों की सुनवाई अब दोबारा होगी

● 50 से अधिक मामले पेंडिंग, घर से 500-500 के अधजले नोटों से भरी बोरियां मिली थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाई कोर्ट में जस्टिस यशवंत वर्मा की अध्यक्षता वाली बेंच द्वारा सुने जा रहे 50 से अधिक मामलों की सुनवाई नए सिरे से होगी। हाई कोर्ट ने इसकी जानकारी एक नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। नोटिस में 52 मामलों की लिस्ट दी गई है, जिनमें सिविल रिट याचिकाएं भी शामिल हैं। ये मामले 2013 से 2025 तक के हैं। इनमें प्रॉपर्टी टैक्स से संबंधित एनडीएमसी अधिनियम के प्रावधानों की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली 22 याचिकाएं शामिल हैं। जस्टिस वर्मा से 23 मार्च को न्यायिक कार्यभार वापस ले लिए गए थे। इसके बाद से वकील इन मामलो को दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस डी. के. उपाध्याय के सामने पेश कर रहे थे। साथ ही आगे की कार्रवाई के लिए निर्देश मांग रहे थे।

ओकेंद्र राणा का ऐलान-समय का इंतजार करो दोस्त,जल्द मिलेंगे

लखनऊ (एजेंसी)। सपा सांसद रामजीलाल सुमन और करणी सेना के बीच विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की रामजीलाल सुमन से मुलाकात के बाद करणी सेना युवा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओकेंद्र राणा ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया है। पोस्ट में अखिलेश यादव और रामजीलाल सुमन की एक फोटो के साथ कैप्शन में लिखा- आज आप हंस रहे हो, हमारे समाज का अपमान करके। जल्द तुम रोओगे और वही समाज हंसेगा। अगली बार अखिलेश रोयेगा, सपा पार्टी के घटिया नेता रोयेंगे। समय का इंतजार करो दोस्त, जल्द मुलाकात होगी। 24 मार्च को पूरा देश देख रहा था, आपके घर की नींव हिलाकर गया था। घर से चिल्लाने की आवाजें निकलवाकर आया था। फिर 12 अप्रैल को सांसद सुमन का घर भारत-पाकिस्तान की सीमा सरहद जैसा बनवाकर गए थे। फिर पुलिस सिक्योरिटी की गुहार करोगे सरकार से। राष्ट्रपति जी को पत्र लिखकर फिर रोओगे तुम सुमन। अब फिर हंस रहे हो- तो जल्द फिर रूला देंगे।

वह तो सारा देश को पता लग गया कि सुमन को मोहरा बनाया था अखिलेश ने। कोई बात नहीं, अगली बार अखिलेश रोयेगा, सपा पार्टी के घटिया नेता रोयेंगे...समय का इंतजार करो दोस्त, जल्द मुलाकात होगी।

संकट मोचन संगीत समारोह

राजेन्द्र शर्मा

(कला समीक्षक एवं उप्र सरकार में अधिकारी)

हर बरस खींची गयी बड़ी लकीर

विश्वविख्यात संकट मोचन संगीत समारोह के अनवरत 102 वें आयोजन तक इसके तीन संयोजक रहे है, संस्थापक और पहले संयोजक महंत अमर नाथ मिश्र, दूसरे संयोजक महंत वीरभद्र मिश्र, तीसरे और वर्तमान संस्थापक महंत विशम्भर नाथ मिश्र। तीनों ही प्रगतिशील और तीनों की परिकल्पना के फलस्वरूप समारोह में हर बरस बड़ी लकीर खींची गयी।

साठ के दशक तक संकट मोचन संगीत समारोह स्थानीय कलाकारों तक सीमित था । समारोह की प्रसिद्धि बढ़ने लगी तो संकट मोचन मंदिर के तत्कालीन महंत वीरभद्र मिश्र ने वर्ष 66-67 के दौरान इसे स्थानीयता की परिधि से बाहर लाते हुए राष्ट्रीय स्वरुप प्रदान किया। उन्होंने पंडित मणिरामजी (पंडित जसराजजी के बड़े भाई) को समारोह में आमंत्रित किया। माना जाता है कि हनुमत कृपा से पंडित घराने के तीनों भाई मणिराम, प्रताप नारायण और जसराज जी देश के दिग्गज शास्त्रीय गायकों की श्रेणी में जा बैठे । इसी कड़ी में दिल्ली के वायलिन वादक विजी जोग और पंडित राजन मिश्र के चाचा पंडित गोपाल मिश्र ने सारंगी पर जुगलबंदी की। तबले पर थे पंडित किशन महाराज। किशन महाराज ने तबले पर ऐसी थाप दी कि ट्यूबलाइट ही टूट गई। उस समय इसको लेकर चर्चाएं भी खूब हुईं। समापन पर तबला वादक पंडित कंठे की अंतिम प्रस्तुति से होती थी।

संकट मोचन संगीत समारोह के 54वें आयोजन यानि वर्ष 1977 तक महिला कलाकारों की प्रस्तुति पर रोक थी। उस्ताद अमीर खां साहब की शिष्या कंकणा बनर्जी की इच्छा हुई कि संकट मोचन संगीत समारोह में प्रस्तुति न सही, बतौर श्रोता तो जाया ही जा सकता है। संयोग से 1978 में पंडित जसराज के बड़े भाई पंडित प्रताप नारायण को संकट मोचन संगीत समारोह में बतौर कलाकार हाजिरी लगाने हेतु आमंत्रित किया गया। उनके साथ शिष्या कंकणा बनर्जी भी वाराणसी आई । पंडित प्रकाश नारायण ने कंकणा का परिचय महंत वीरभद्र मिश्र से कराया। पचपनवें संकट मोचन संगीत समारोह की अन्तिम निशा में पंडित प्रताप नारायण की प्रस्तुति थी। विदुषी कंकणा बनर्जी उस समय श्रोता के रुप में बैठी थीं। अर्द्ध रात्रि जब पंडित प्रताप नारायण की प्रस्तुति का समय आया तो संचालक ने पंडित जी को आमंत्रित करते हुए कहा कि तानपुरे पर संगत उनकी शिष्या कंकणा बनर्जी करेंगी। यह सुनकर कंकणा हैरान परेशान। दरअसल वीरभद्र मिश्र के आदेशानुसार ही संचालक ने ऐसा किया था। लिहाजा कंकणा श्रोताओं के बीच में से उठकर मंच पर पहुंची और तानपुरा संभाला।

पंडित प्रताप नारायण की तानपुरे पर संगत करते हुए बीच में कंकणा ने भी सुर लगा दिया। महिला स्वर का आलाप लगते ही श्रोताओं में कानाफूसी होने लगी। कतिपय परम्परा टूट जाने के नाजुक पलों में महंत प्रो. वीरभद्र मिश्र ने पहले माहौल को समझा और फिर हाथ उठाकर सभी को शांत रहने का संकेत दिया। श्रोताओं की कानाफूसी के बीच जैसे ही पंडित प्रताप नारायण की प्रस्तुति पूर्ण हुई तो गजब की इच्छाशक्ति और दूरदर्शी महंत वीरभद्र मिश्र ने स्वयं ही माइक संभालते हुए कहा कि संगीत किसी जेंडर और मजहब की सीमा में कैद नहीं होता। उन्होंने तत्काल घोषणा कर दी कि अगले वर्ष के आयोजन में विदुषी कंकणा बनर्जी अपनी स्वतंत्र प्रस्तुति देंगी। उसके बाद संकट मोचन संगीत समारोह में महिला कलाकारों के लिए द्वार खुले गये ।

महंत स्व. अमरनाथ मिश्र

महिला कलाकारों की प्रस्तुति की भांति ही संकट मोचन संगीत समारोह में साल 2006 तक मुस्लिम कलाकारों की प्रस्तुति नहीं होती थी। सात मार्च 2006 को कैंट स्टेशन और संकट मोचन मंदिर में सीरियल बम ब्लास्ट से वाराणसी कांप गया। इस आतंकी हमले के बाद क्या हिंदू और क्या मुसलमान सभी आशंकित कि गंगा-जमुनी तहजीब से लबालब वाराणसी का सौहार्द बचेगा भी या नहीं? ऐसे कठिन समय में महंत वीरभद्र मिश्र ने ऐतिहासिक फैसला लिया कि अगले माह होने वाले संकट मोचन संगीत समारोह के 83 वें आयोजन में मुस्लिम कलाकारों को भी मंच प्रदान किया जायेगा। ऐसी मान्यता है कि 16वीं शताब्दी में तुलसीदास ने पवित्र ग्रंथ 'रामचरितमानस' का एक अच्छा-खासा हिस्सा वहीं रहकर लिखा था। अत्यन्त महत्वपूर्ण मंदिर परिसर में मुस्लिम कलाकारों की प्रस्तुति को लेकर महंतजी के निर्णय की आलोचना भी हुई लेकिन 83 वें संकट मोचन संगीत समारोह में भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां के भांजे मुमताज खां ने शहनाई वादन के साथ अपनी हाजिरी लगाई और वे संकट मोचन संगीत समारोह में शिरकत करने वाले पहले मुस्लिम कलाकार बनें। उसके बाद तो तलत अजीज, बॉलीवुड गायक जावेद अली, कमाल साबरी, उस्ताद निशात खां, उस्ताद मोइनुद्दीन खां, अरमान खान, बिलाल खान, उस्ताद राशिद खान, उस्ताद मुराद अली, शाकिर खान, शमीउल्लाह खान, उस्ताद शाहिद परवेज खान,उस्ताद अकरम खां, अरमान खान, बिलाल खां आदि कलाकारों ने यहां प्रस्तुति दी है। 2014 में जब पाकिस्तान के मशहू फनकार गुलाम अली ने यहां हाजिरी लगाई तब इस समारोह ने और व्यापक रूप ले लिया ।

गुलाम अली दो बार इस समारोह में अपनी हाजिरी लगा चुके हैं। पहली बार गुलाम अली आने का कट्टरपंथियों ने कड़ा विरोध किया था। फिर भी वो आए और अपनी प्रस्तुति देकर हर किसी को अपना मुरीद बना लिया। संकट मोचन संगीत समारोह अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो चुका है। संकट मोचन संगीत समारोह का प्रारूप संगीत और संस्कृति की पूरी अवधारणा को धार्मिक होने से बचाता है। संगीत समारोह और गंगा में एकरूपता है. जैसे गंगा सभी के लिए हैं, वैसे ही संकट मोचन का मंच भी सभी के लिए है। ये सभी के लिए जीवन के अविकल और निर्विवाद आधार हैं।

हाईवे पर टक्कर में चार पहिया वाहन पलटा

- कार ड्राइवर निकलकर भागा, बाइक सवार को सिर में चोट आई, अस्पताल में भर्ती

मुरैना (नप्र)। मुरैना शहर के सिविल लाइन थाना क्षेत्र में कार और बाइक की भिड़ंत में इससे कार पलट गई। बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया, उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। कार से ड्राइवर बड़ी मुश्किल से बाहर निकल पाया। वह फरार है। घटना सोमवार दोपहर की है। सिकरौदा निवासी श्रीकृष्ण उपाध्याय पुत्र भवानी उपाध्याय बाइक से मुरैना आ रहे थे। जैसे ही वे सेल्टेक्स बैरियल के पास हाईवे पर पहुंचे, तभी एक तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी। श्रीकृष्ण उपाध्याय सड़क पर गिर, उनके सिर में गंभीर चोट आई। हादसे की सूचना पर भाजपा युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष किशोर शर्मा को अपने साथियों के साथ पहुंचे और घायल श्रीकृष्ण को तुरंत मुरैना जिला अस्पताल पहुंचाया। जिला अस्पताल मुरैना में ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर और नर्सिंग ऑफिसरों की मदद से घायल को प्राथमिक उपचार दिया गया। सिर में गंभीर चोटों के मद्देनजर डॉक्टरों ने उन्हें सर्जिकल वार्ड में भर्ती कर लिया है। डॉक्टरों के अनुसार, फिलहाल उनकी हालत गंभीर लेकिन स्थिर बनी हुई है।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना की राज्य स्तरीय अनुमोदन समिति के कार्यकाल में वृद्धि

भोपाल(नप्र)। राज्य शासन द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत खाद्य प्र-संस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा संचालित प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना (पी.एम.एफ.एम.ई. योजना) के अंतर्गत गठित राज्य स्तरीय अनुमोदन समिति के कार्यकाल को एक वर्ष (वित्तीय वर्ष 2025-26) के लिए बढ़ा दिया गया है। योजना के दिशा-निर्देशों अनुसार समिति का गठन वर्ष 2020-21 से 2024-25 तक 5 वर्षों की अवधि के लिए किया गया था। राज्य शासन द्वारा इस समिति के कार्यकाल में एक वर्ष की वृद्धि करते हुए इसे आगामी वित्तीय वर्ष तक विस्तारित किया गया है। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा आदेश जारी कर दिये गये हैं।

ठेले वाले के अकाउंट में 30 लाख रुपए का ट्रांजेक्शन

- किराए पर चला रहे थे खाते, ठगी के पैसे आते ही निकाल लेते थे

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में अब तक की सबसे बड़ी डिजिटल ठगी का खुलासा हुआ है। उज्जैन के नागदा में बंधन बैंक के अफसर और कर्मचारियों ने फर्जी बैंक अकाउंट बनाए, जिनका इस्तेमाल ऑनलाइन ठगों ने धोखाधड़ी के लिए किया। इन बैंक कर्मचारियों ने जरूरतमंद लोगों को 1 हजार रुपए का लालच देकर उनके नाम पर अकाउंट खुलवाया और पासबुक व एटीएम कार्ड अपने पास रखे। ग्वालियर पुलिस ने इस मामले में छापेमारी कर नागदा, उज्जैन और रतलाम से छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है। 2.53 करोड़ की ठगी के 10 लाख रुपए एक सब्जी वाले के खाते में आए थे। जांच में तीन और संदिग्ध खातों से करोड़ों रुपए के लेन-देन का पता चला है। यह मामला रामकृष्ण मिशन आश्रम से जुड़ा है। पिछले 5 महीनों में ग्वालियर और उज्जैन से मिलाकर 3.24 करोड़ की ठगी हुई है।

बिजली के तारों से निकली चिंगारी से भड़की आग

- डीजल टैंकर के टायर जलकर खाक, टली बड़ी दुर्घटना

भोपाल (नप्र)। बैरसिया रोड स्थित लांबाखेड़ा में रविवार शाम करीब 6.45 बजे उस वक्त हड़कंप मच गया जब एक पार्किंग में खड़े डीजल टैंकर में अचानक आग लग गई। चश्मदीदों के मुताबिक, पार्किंग के पास से गुजर रही बिजली की लाइन से निकली चिंगारी ने बांस व कचरे को चपेट में ले लिया, जिससे आग फैलती हुई टैंकर तक पहुंच गई। आग की लपटें उठते देख आसपास के रहवासियों ने तुरंत फायर ब्रिगेड को सूचना दी, लेकिन दमकल के पहुंचने से पहले ही लोगों ने हिम्मत दिखाते हुए आग पर काबू पाने की कोशिश की। करीब 15-20 मिनट बाद गांधीनगर फायर स्टेशन से एक दमकल मौके पर पहुंची और आग को पूरी तरह से काबू में कर लिया। घटना में टैंकर के पीछे के टायर पूरी तरह से जलकर खाक हो गए, हालांकि समय रहते आग पर काबू पा लिया गया, जिससे बड़ा हादसा टल गया। यह घटना ईंटखेड़ी बायपास पर स्थित चौरसिया ढाबे के पीछे बनी एक निजी पार्किंग की है। फिलहाल दमकल कर्मी आग लगने के कारणों की जांच कर रहे हैं, लेकिन शुरुआती अनुमान यही है कि बिजली के तारों से निकली चिंगारी ही आग की वजह बनी। मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने बताया कि यदि आग टैंकर के मुख्य हिस्से तक पहुंचती, तो बड़ा धमाका हो सकता था।

जनसेवा का प्रभावी माध्यम है सिविल सेवा : मुख्यमंत्री

सीएम डॉ. यादव ने नेशनल सिविल सर्विस-डे पर अधिकारियों को मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया

- पुरस्कार में लोकसेवकों को प्रदान किया 1 लाख रुपए का चेक और प्रशस्ति-पत्र
- मुख्यमंत्री ने प्रशासन अकादमी में आयोजित सिविल सेवा दिवस समारोह 2025 को किया संबोधित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सिविल सेवा सिर्फ एक पेशा नहीं, यह जनसेवा का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि सिविल सेवकों का दायित्व है कि वे अपने अधिकारों का निःसंदेह सदुपयोग करें, लेकिन अपने कर्तव्यों से कदापि विमुख न हों। उन्होंने कहा कि लोक प्रशासन एक वृहद विषय है। इसका मूल मंत्र है - 'लोगों की हर संभव तरीके से सेवा'। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को राष्ट्रीय लोक सेवा दिवस (नेशनल सिविल सर्विस डे) के अवसर पर आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी के स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के सभी सिविल सेवकों को लोक सेवा दिवस की बधाई दी और सभी से अपने उत्तरदायित्वों के प्रति संकल्पबद्ध रहने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोक सेवा एक बड़ी जिम्मेदारी है, जिसे पूरी निष्ठा, समर्पण, मनोयोग के साथ निभाना आवश्यक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रदेश के चयनित 16 सिविल सेवकों (अधिकारियों) को मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने सभी अवार्डियों को उनके द्वारा किए गए नवाचारों के लिए बधाई देकर एक लाख रुपये का नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर प्रोत्साहित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि एक कुशल सिविल सेवक वह होता है, जो न केवल शासन के नियमों, उपनियमों का पालन करे, बल्कि पूरी संवेदनशीलता के साथ जनता की कठिनाइयों एवं समस्याओं को समझे और उन्हें समुचित समाधान भी प्रदान करें। उन्होंने सभी सिविल सेवकों से अपेक्षा की कि वे नागरिकों की तत्पर सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें और शासन को जनकल्याण की दिशा में अधिक प्रभावी बनाने की ओर अग्रसर करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे कामों और कार्यप्रणाली में पारदर्शिता बेहद जरूरी है। इसीलिए सभी लोक सेवक शासन व्यवस्था में पारदर्शिता लाने और लोक जवाबदेही की भावना को और मजबूत करने की दिशा में कार्य करें।

कार्यक्रम में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री संजय दुबे, नरोन्हा व्याख्यान श्रृंखला के मुख्य वक्ता डॉ. दीपक पागला, राज्य शासन के सभी अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव एवं अन्य सभी वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विकसित भारत@2047 में मध्यप्रदेश की भूमिका महत्वपूर्ण है। राज्य के लोकसेवकों ने अपने कर्तव्यों को बखूबी निभाया है। जमीनी स्तर पर अधिकारियों द्वारा किए जा रहे नवाचारों को संकलित कर सुशासन के लिए योजना तैयार करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना और विकास में चाणक्य की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि महामंत्री चाणक्य ने सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा बनाया था और वे स्वयं मंत्री बने थे, जिससे एक शक्तिशाली राजवंश में प्रशासन की व्यवस्था को बेहतर तरीके से संचालित किया जा सके। उन्होंने कहा कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने आजादी के बाद देश के भविष्य की नींव तैयार करने के लिए लोक सेवक व्यवस्था को विस्तार दिया और उनके लिए सेवा नियम (सर्विस रूल्स) तैयार किए। उन्होंने लोक सेवकों के लिए तीन बातों- डिग्निटी, इंटीग्रिटी और इंकरप्टिबिलिटी को रेखांकित किया था।

करप्शन फ्री और गुड गवर्नेंस के लिए कार्य करें सभी लोकसेवक: मुख्य सचिव

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने कहा कि हर साल 21 अप्रैल अधिकारी/कर्मचारियों के लिए आत्ममंथन करने का दिन है। लोक सेवकों को सोचना चाहिए कि सालभर में उन्होंने जनसेवा और प्रशासन की मजबूती के लिए क्या अच्छा किया और इसके आगे क्या बेहतर किया जा सकता है। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को विश्वास दिलाया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत@2047 के मिशन को पूरा करने में प्रदेश की भूमिका और विकसित मध्यप्रदेश के लिए सभी लोकसेवक कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। प्रदेश के सभी अधिकारी ईज ऑफ लिविंग और ईज ऑफ डूईंग बिजनेस के लिए मिशन मोड में कार्य कर रहे हैं। मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि न्यू इंडिया का सपना साकार करने में अनुभवी अधिकारियों के साथ युवा अफसरों के कंधों पर भी बड़ी जिम्मेदारी है।

16 लोकसेवकों को मिला मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार: मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वित्त वर्ष 2022-23 तथा 2023-24 के लिए 16 लोक सेवकों में क्रमशः श्री माधव प्रसाद पटेल (माध्यमिक शिक्षक), श्रीमती अदिति गर्ग (तत्कालीन सीईओ आयुष्मान भारत निरामयम योजना), डॉ. इंदिरा दांगी (शिक्षक) आष्टा जिला सीहोर, श्रीमती शारदा डुडवे (माध्यमिक शिक्षक) चंद्रशेखर आजाद नगर, श्री आलोक पौराणिक प्राथमिक शिक्षक पथरिया जिला दमोह, श्री चंद्रमोहन ठाकुर तत्कालीन प्रबंध निदेशक भवन विकास निगम, डॉ. यशपाल सिंह प्राचार्य आवासीय विद्यालय भोपाल, श्री संजय जोशी प्रबंध संचालक विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, श्री अमित तोमर तत्कालीन प्रबंध संचालक पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर, श्री ऋषव गुप्ता पूर्व कलेक्टर देवास, श्री गणेश शंकर मिश्रा तत्कालीन प्रबंध संचालक विद्युत वितरण कंपनी, श्री दिव्यांक सिंह तत्कालीन सीईओ स्मार्ट सिटी परियोजना इंदौर, श्री प्रवीण सिंह अढायच पूर्व कलेक्टर सीहोर, प्रो. बेला सचदेवा सहायक प्राध्यापक इंदौर, श्री भूपेंद्र कुमार चौधरी माध्यमिक शिक्षक चिमनाखारी जिला सिवनी तथा सुश्री शीला दाहिमा अतिरिक्त सचिव शिक्षा विभाग को नवाचारों एवं उत्कृष्ट कार्यों के लिए मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किए।

प्रशासन अकादमी में हुई नरोन्हा व्याख्यान श्रृंखला: सिविल सेवा दिवस समारोह 2025 के अवसर पर प्रशासन अकादमी में नरोन्हा व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया है, जिसमें प्रदेश भर के अधिकारी, कर्मचारी शामिल हुए। व्याख्यान के मुख्य वक्ता डॉ. दीपक बागला ने सभागार में उपस्थित अधिकारियों को विकसित भारत के लिए सुशासन से जुड़े अनुभव साझा किए। प्रशासन अकादमी के संचालक श्री मुजीबुर्रहमान ने सभी अथितियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

भोपाल में पांच हजार का इनामी बदमाश गिरफ्तार

- अड़ीबाजी और मारपीट के मामले में फरार था, आरोपी के कब्जे से छुरी बरामद

भोपाल (नप्र)। भोपाल की टीला जमालपुरा पुलिस ने हिस्ट्रीशीटर बदमाश को गिरफ्तार किया है। आरोपी पर पांच हजार रुपए का इनाम डीसीपी रियाज इकबाल ने घोषित कर रखा था। आरोपी अड़ीबाजी और मारपीट के मामले में फरार चल रहा था।

मुखबिर की सूचना पर राजीवनगर टीला जमालपुरा से उसे रविवार की रात को गिरफ्तार किया। तलाशी लेने पर उसके पास से एक छुरी मिली है। टीआई डीपी सिंह ने बताया कि 2 जनवरी 2025 को कमल पिता रमेश (45) साल निवासी राजीव नगर ने थाना आकर बताया कि सलमान उर्फ पत्ती, आफताब, मुईस द्वारा गाली देकर अड़ीबाजी की गई और मारपीट की गई है। जिसके बाद आरोपियों पर एफआईआर दर्ज की गई है। घटना के दो दिन के भीतर आरोपी आफताब और मुईस की गिरफ्तारी कर ली गई थी।

आरोपी बोली क्षेत्र में रंजिश ज्यादा है, सुरक्षा के लिए रखी छुरी: जबकि चार महीने से आरोपी सलमान फरार चल रहा था। जिसे मुखबिर की सूचना पर रविवार की रात को गिरफ्तार किया। आरोपी की तलाशी में छुरी बरामद हुई। उसने पूछताछ में बताया कि क्षेत्र में उसकी रंजिश है, सुरक्षा के लिहाज से छुरी रखकर घूमता है।

रायसेन में बाइक सवार दो भाइयों की बोलेरो से टक्कर, एक की मौके पर मौत

छोटा भाई भोपाल रेफर, डीजल लेकर लौट रहे थे

रायसेन (नप्र)। रायसेन में सोमवार को नेशनल हाईवे-45 पर मारुति पेट्रोलियम बीझा के पास एक तेज रफ्तार बोलेरो ने बाइक सवार दो भाईयों को टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि बाइक के दो टुकड़े हो गए और खेत में जा गिरी। हादसे में बड़े भाई की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि छोटा भाई गंभीर रूप से घायल हो गया।

डीजल लेकर लौट रहे थे दोनों भाई: मृतक की पहचान राजकुमार लोधी के रूप में हुई है, जबकि गंभीर रूप से घायल छोटे भाई का नाम गजेंद्र लोधी है। दोनों भाई रायसेन जिले के रमखिरिया गांव के निवासी थे और खेती-किसानी का कार्य करते थे।दोनों दोपहर करीब 2 बजे पेट्रोल पंप से डीजल लेकर लौट रहे थे। तभी तेज रफ्तार से आ रही बोलेरो ने उनकी बाइक को सामने से टक्कर मार दी।

घायल भाई भोपाल रेफर: टक्कर इतनी भयानक थी कि राजकुमार लोधी की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि गजेंद्र को गंभीर हालत में पहले उदयपुरा अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें भोपाल रेफर कर दिया गया है। परिजनों के अनुसार, दोनों भाई अविवाहित थे और पूरे परिवार की जिम्मेदारी उठाते थे। स्थानीय लोगों ने तुरंत राहत कार्य शुरू किया और पुलिस को सूचित किया। उदयपुरा थाने की पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दो वर्षीय बहन और मां की मौत, इंदौर में घर पर इंतजार करता रहा छह वर्षीय हरमन

इंदौर। रायसेन में हुई सड़क दुर्घटना में इंदौर निवासी मां और बेटी की मौत हो गई। भाई की शादी में शामिल होने महिला बेटी और पति के साथ सुपौल गई थी। लौटते समय हादसा हुआ है। इसमें इंदौर के राजनगर निवासी सरिता पत्नी खोलवाल और उसकी दो वर्षीय बेटी तस्वी की मौत हुई है। पति रवि घायल है, जिसका भोपाल के निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। वे छह वर्षीय बेटे हरमन को दादा-दादी के पास छोड़ गए थे। हरमन को सोमवार सुबह से घटना के बारे में नहीं बताया गया, लेकिन घर पर बड़ी संख्या में लोगों के एकत्र होने पर वह बार-बार मां को याद करता रहा।

कोई उसे मोबाइल देकर उसका मन बहला रहा था, तो कोई दूसरे बच्चों के साथ खेलने का बोलता रहा। मगर वह बोल रहा था कि मोबाइल नहीं चाहिए, मां के पास जाना है।

सीएम से मिले श्री आनंदपुर धाम के पदाधिकारी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से सोमवार को स्टेट हैंगर पर अशोकनगर जिले के श्री आनंदपुर धाम के पदाधिकारियों ने सौजन्य भेंट की। पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को गुरु महाराज का श्रीप्रसाद प्रदान किया और श्री आनंदपुर

धाम पधारने के लिए आभार व्यक्त कर पुनः पधारने का आग्रह भी किया।

मुख्यमंत्री ने नव दम्पति को दिया आशीर्वाद

भोपाल।मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुरहानपुर विधायक एवं पूर्व मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस के यहां आयोजित विवाह समारोह में शामिल होकर चिं. समर्थ और सौ.कां. नम्रता को आशीर्वाद दिया। उन्होंने उनके सुखद, स्वस्थ एवं सफल दांपत्य जीवन की मंगलकामनाएँ दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नव विवाहित जोड़े को रामचरित मानस महाकाव्य की प्रति भी भेंट की।समारोह में जल संसाधन एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, सांसद श्री ज्ञानेश्वर पाटील, नेपानगर विधायक सुश्री मंजू दादू, उपस्थित रहे।

भोपाल में एनसीसी नेवल कैडेट्स की एलुमनी मीट

देशभर के पूर्व कैडेट्स ने अपने एक्सपीरियंस शेयर किए, जनसेवा संकल्प लिया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के लोअर लेक स्थित वॉटर स्पोर्ट्स अकेडमी परिसर में रविवार को नेवल एनसीसी कैडेट्स की एलुमनी मीट हुई। इस इवेंट में पूरे देशभर से पूर्व नेवल एनसीसी कैडेट्स और ऑफिसर्स ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की थीम थी 'समवन फॉर समवन', जिसका मतलब है - किसी और के लिए कुछ करना, यानी समाज के लिए सेवा करना। इस एलुमनी मीट का आयोजन 1 एमपी नेवल यूनिट एनसीसी एलुमनी एसोसिएशन ने किया। इस मौके पर 1971 के पहले बैच से लेकर 2024 तक के नेवल एनसीसी कैडेट्स और ऑफिसर्स एक साथ जुटे। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी हुईं, साथ ही पूर्व कैडेट्स ने अपने अनुभव शेयर किए और वर्तमान कैडेट्स को प्रोत्साहित किया। इस दौरान 1974 से 1978 बैच के पूर्व कैडेट्स को स्मृति चिन्हित दिए गए।

अनुशासन और देश सेवा की भावना

इस आयोजन में एनसीसी लेफ्टिनेंट रिटायर्ड डॉक्टर वीके पाराशर ने बताया कि, उन्होंने 30 वर्षों तक एनसीसी में सेवा की है। उनका मानना है कि एनसीसी कैडेट्स जब 3 साल की ट्रेनिंग पूरी करते हैं, तो उनका पूरा व्यक्तित्व बदल जाता है। उनका व्यवहार, सोच और जीवनशैली में एक सकारात्मक बदलाव आता है। वे समाज के लिए कुछ करने की भावना से प्रेरित होते हैं। इसी उद्देश्य से यह मीट रखी गई, ताकि सीनियर्स और जूनियर्स मिलकर समाज के लिए कुछ सार्थक कर सकें।

शैलजा बोलीं-पैसा ही नहीं हैं तो लॉन्ड्रिंग कहां से हुई

भोपाल में बोलीं- नेशनल हेराल्ड केस में मोदी-शाह ने मनी लॉन्ड्रिंग का झूठा प्रचार किया

भोपाल (नप्र)। नेशनल हेराल्ड केस में ईडी ने सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ चार्जशीट पेश की है। गांधी परिवार पर लगे आरोपों को लेकर कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव और पूर्व केन्द्रीय मंत्री कुमारी शैलजा ने भोपाल में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कुमारी शैलजा ने कहा- मीडिया में भाजपा और सरकार द्वारा भ्रम फैलाया जा रहा है। भाजपा, आरएसएस का मानना है कि एक बात को तब तक बोलते रहो, जब तक लोग सच न मान लें। कितना भी गलत बोलेंगे लोग आखिरकार उसे सच मानने लग जाएंगे। कुछ बातें ऐसी हैं जिनको लेकर ये सालों से लगे हैं फिर भी निचोड़ नहीं निकल रहा। इनका प्रयास लोगों के असली मुद्दे जो आम नागरिक की जिन्दगी को छूते हैं उन सब बातों से ध्यान हटाएं।

ईडी का आरोप पत्र ध्यान भटकाने की कोशिश

कुमारी शैलजा ने कहा- नेशनल हेराल्ड मामला देश के सामने मौजूद ज्वलंत मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने और देश को गुमराह करने के लिए भाजपा की साजिश है। ये सरासर एक राजनीतिक प्रतिशोध है। सोनिया गांधी और विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ श्वष्ठ द्वारा दायर आरोपपत्र कुछ और नहीं बल्कि जनता का ध्यान बेरोजगारी, गिरती तष्ठक और सामाजिक अशांति से भटकाने, जनता को भ्रमित करने और बरगलाने के लिए गढ़ा गया एक झूठ है।

बिना पैसे के पहली बार मनी लॉन्ड्रिंग का केस बनाया गया

शैलजा ने कहा- आर्थिक संकट, लोगों के मुद्दों और विदेश नीति से जुड़ी चुनौतियों- अमेरिका, चीन और बांग्लादेश से ध्यान भटकाने के लिए उन्हें जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। यह कानूनी प्रतिशोध के अलावा कुछ और नहीं है। अगर कोई कंपनी कर्ज से छुटकारा पाना चाहती है तो वह एक नई कंपनी बनाती है और उस कर्ज को नई कंपनी में ट्रांसफर करती है। कंपनी कानून के मुताबिक यह कानूनन सही है। जब पैसा ही नहीं है तो इसमें लॉन्ड्रिंग कहां है? अगर कोई अपराध हुआ है तो वह दो मास्टरमाइंड ने किया है, मोदी जी और अमित शाह, जिन्होंने मनी लॉन्ड्रिंग का झूठा प्रचार करके कानून का दुरुपयोग किया है।

सरकार ने ईडी को अपना विभाग बना लिया है

चुनिंदा न्याय कुछ और नहीं बल्कि राजनीतिक ठगी है। प्रवर्तन निदेशालय को जवाब देना चाहिए कि एजेंसी ने एनडीए के किसी सहयोगी या भाजपा नेता को क्यों नहीं हुआ। यह बदले की राजनीति, धमकी, उत्पीड़न और भय फैलाने की राजनीति है। हमें कितना भी चुप कराने की कोशिश करें, हम चुप नहीं होंगे। जो दूसरों को डराने की कोशिश करते हैं, वे खुद डरे हुए हैं। यह एक राजनीतिक साजिश है और कांग्रेस पार्टी इसका डटकर सामना करेगी।

संपादकीय

विरोध हिंदी का, निशाना सियासी

महाराष्ट्र में राज ठाकरे की पार्टी मनसे ने राज्य में हिंदी तो तीसरी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाने का जो विरोध किया है, वह उनकी हाशिए पर जाती राजनीति को संजीवनी देने की निरर्थक कोशिश है। साथ ही इस मुद्दे पर मराठी माणूस को गोलबंद करने का प्रयास है, जिससे कोई खास नतीजा निकलने की उम्मीद कम ही है। अलबत्ता हिंदी विरोध के मुद्दे पर 19 साल से अलग राह चल रहे भाई राज और उद्धव ठाकरे करीब आ सकते हैं। लेकिन यह काम भी आसान नहीं है। महाराष्ट्र की महायुति सरकार ने मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति के तहत हाल में आदेश जारी किया कि अब सभी स्कूलों में हिंदी तीसरी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाई जाएगी। इसका राज्य के कई हलकों में यह कहकर विरोध होने लगा कि आखिर बच्चे कितनी भाषाएं सीखेंगे? मराठी और अंग्रेजी तो पहले से ही पढ़ाई जा रही है अब हिंदी का बोझ भी। हालांकि महाराष्ट्र में छठी कक्षा से हिंदी पहले भी पढ़ाई जा रही थी, लेकिन वह अनिवार्य नहीं थी। अब बच्चों को उसमें भी पास होना जरूरी होगा। सरकार के इस आदेश पर अलग अलग प्रतिक्रियाएं हैं। एक वर्ग का मानना है कि महाराष्ट्र से बाहर और कुछ हद तक महाराष्ट्र भी संपर्क भाषा के रूप में हिंदी सभी को सीखनी चाहिए। वैसे भी उत्तर महाराष्ट्र और मुंबई में हिंदी ही संपर्क भाषा बन गई है। । जबकि दूसरे वर्ग का मानना है कि वो हिंदी के खिलाफ नहीं बल्कि हिंदी 'थोपे' जाने के खिलाफ हैं। यह मराठी भाषा और मराठी अस्मिता को बचाने का प्रश्न भी है। भाषा को लेकर महाराष्ट्र का मन हमेशा उदार ही रहा है। यही वजह है कि मुख्य रूप से हिंदी फिल्में बनाने वाला बॉलीवुड किसी भाषी हिंदी भाषी राज्य में नहीं, बल्कि मराठी भाषी महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में है और पूरी तरह फल फुल रहा है। इसमें काम करने वाले बहुत से लोग मराठी भाषी हैं। मराठी के कई कवियों जैसे नामदेव आदि ने हिंदी में भी रचनाएं की हैं। हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को समृद्ध करने में मराठीभाषियों का बड़ा योगदान है। वैसे भी महाराष्ट्र की उत्तरी सीमा दो हिंदी भाषी राज्यों से लगती है। हिंदी और मराठी की लिपि एक सी यानी देवनागरी है। बहुत सारे शब्द भी समान हैं, हालांकि कई बार उनके अर्थ अलग अलग होते हैं। हर मराठीभाषी थोड़ी बहुत हिंदी तो बोल ही लेता है और समझते तो लगभग सभी हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी मराठी को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाने का उन राज ठाकरे का विरोध क्यों है, जो खुद हिंदी न्यूज चैनलों को धाराप्रवाह हिंदी में इंटरव्यू देते रहते हैं, तो इसका कारण बहुत साफ है। अगर सुप्रीम कोर्ट का फैसला जल्द आ जाता है तो महाराष्ट्र में स्थानीय निकायों के चुनाव, जिनमें मुंबई महानगर पालिका भी शामिल है, के चुनाव हो सकते हैं। कोर्ट में यह मामला स्थानीय निकायों में ओसीबी आरक्षण को लेकर अटका हुआ है। इन चुनावों में राज ठाकरे अपने राजनीतिक पुनर्वास के लिए कोई कंधा खोज रहे हैं। लेकिन उनकी उग्र और मारधाड़ वाली राजनीति के कारण कोई पार्टी या गठबंधन उन्हें साथ नहीं रखना चाहता। राज को उम्मीद है मुखर हिंदी विरोध के चलते मराठी वोटर उनके पास खिंचा आएगा। यह खाम खयाली ज्यादा है। क्योंकि महाराष्ट्र में हिंदी का विरोध तमिलनाडु की तरह संभव ही नहीं है। महाराष्ट्र देश के साथ चलने वाला प्रदेश है। बहुतो का मानना है कि व्याकरण की दृष्टि से मराठी भाषियों को हिंदी सीखने में दिक्कत आ सकती है, लेकिन राजभाषा को सीखने से अंतत- लाभ ही होगा।

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

भिक्षावृत्ति पर अंकुश के लिए प्रभावी कानून जरूरी

भोपाल जिला प्रशासन ने राजधानी में भीख मांगने, भिक्षा देने और भिखारियों से सामान खरीदने पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की। यह कदम एक महीने पहले इंदौर में जारी किए गए इसी तरह के निर्देश के बाद उठाया गया है। भोपाल जिला कलेक्टर ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (6) की धारा 163(2) को लागू करके प्रतिबंध लागू किया। आदेश में आगे कहा गया है कि इन नियमों का कोई भी उल्लंघन 6 धारा 223 के तहत मुकदमा चलाने की ओर ले जाएगा।

भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि के बावजूद, भीख मांगना एक सामाजिक समस्या के रूप में हमारे समाज में मानव सभ्यता की शुरुआत से ही मौजूद है। हमारी सरकार द्वारा कई उपाय करके और कानून लाकर इसे खत्म करने का इरादा रखने के बाद भी यह अभी भी बनी हुई है। हमारे पूरे देश में कोई केंद्रीय कानून नहीं है। लेकिन, राज्यों ने अपने स्वयं के भीख मांगने के खिलाफ कानून बनाए हैं। भारतीय न्यायशास्त्र में भीख मांगने से जुड़े कानून अभी भी मौजूद हैं। भले ही समाज में पहले से ही कमजोर वर्ग के बीच किसी भी तरह के दुर्व्यवहार और आपराधिक कृत्य की किसी भी धारणा के बिना कोई सबूत मौजूद हो। यह चिंता का विषय है कि भारत में भीख मांगने से संबंधित कानूनों द्वारा भीख मांगने पर अनुचित प्रतिबंध उन भिखारियों को वंचित करता है, जो अपने जीवन यापन के लिए आखिरी सहारा के रूप में भीख मांगते हैं, और उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।

इस प्रकार भारत में भिक्षावृत्ति एक बहुत ही गंभीर मुद्दा बन गया है। इस पर ध्यान देना चाहिए। इतने प्रयासों के बावजूद, भारत इस सामाजिक समस्या को खत्म नहीं कर पाया है। हाल ही में एक शोध में एक तरह से भारत में भिक्षावृत्ति पर मौजूदा कानूनों के प्रावधान और क्या वे भिक्षावृत्ति को अपराध मानते हैं और दंडात्मक दृष्टिकोण सही है या नहीं, इस पर विचार किया गया। यदि दंडात्मक प्रावधान सही नहीं है तो किस दृष्टिकोण का सहारा लिया जाना चाहिए। साथ ही प्रभावी कार्यान्वयन के लिए क्या उपाय उपयुक्त हैं, इस पर विचार किया गया। हमारे देश में सड़कों पर भीख मांगने का हमारे राष्ट्रीय विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सड़कों पर भीख मांगने की यह समस्या हमारे देश की आत्मनिर्भरता की अवधारणा को नष्ट करने के साथ-साथ सामाजिक संगठन के लिए भी खतरा है। इसलिए, भिखारियों की एक श्रेणी है जिसमें कुछ लोग व्हील चेयर पर आते हैं, तो कुछ बैसाखी या चलने वाली छड़ियों का सहारा लेते हैं। कुछ ऐसे नवाचार भी हैं जिनमें कुछ लोग ध्यान आकर्षित करने वाला संगीत बजाते हैं। कुछ मानसिक रूप से विकलांग होते हैं, जबकि कुछ इसे आक्रामक तरीके से करते हैं।

वे दिन चले गए जब भीख मांगना एक प्रथा मानी जाती थी, जो केवल जरूरतमंद या खुद के लिए कमाने में असमर्थ लोगों द्वारा की जाती थी। नया चलन सामने आया है जहां युवा और ऊर्जावान लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए काम करने के बजाय भीख मांगने को पैसे कमाने का सबसे सुविधाजनक और पक्का तरीका मानते हैं। शारीरिक रूप से विकलांग लोग दूसरी श्रेणी के लोग हैं जिनके लिए भीख मांगना जीवित रहने का एक साधन है। यह हमारी सामाजिक उपेक्षा का परिणाम हैं। इनके पास रोजी-रोटी के लिए दूसरों पर निर्भर रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। फिलहाल, भारत में भीख मांगने से रोकने को लेकर कोई केंद्रीय कानून नहीं है। हालांकि, 1959 का बॉम्बे प्रिवेन्शन ऑफ बेगिंग एक्ट राजधानी दिल्ली सहित बीस से ज्यादा राज्यों में लागू है। यह कानून भीख मांगने को अपराध बनाता है। यह कानून सिर्फ सड़कों पर भीख मांगने को ही अपराध नहीं बनाता।

अगर आप किसी भी सार्वजनिक जगह पर डांस करके, गाना गाकर, कोई 3चित्रकारी करके, कोई करतब दिखाकर या किसी भी तरह से ऐसा कुछ करते हैं जिसके बदले आपको लोगों से पैसे मिलते हैं, उसे भी 'भीख' मानता है। अगर कोई व्यक्ति भीख मांगते हुए पकड़ा जाता है तो उसे एक से तीन साल तक बगेर होम में डिटेन करके रखा जा सकता है। अगर वही व्यक्ति दोबारा भीख मांगते हुए पकड़ा जाता है तो फिर दस साल तक उसे हिरासत में रखा जा सकता है। इतना ही नहीं, भीख मांगने पर पुलिस बिना किसी वारंट के भी गिरफ्तार कर सकती है। इसी तरह उत्तर प्रदेश में भी 1975 से कानून है। यह कानून निजी जगहों पर भीख मांगने को अपराध मानता है। प्राइवेट प्लेस में भीख मांगने वाले व्यक्ति को पुलिस बिना किसी वारंट के गिरफ्तार कर सकती है।

हाल ही में, भोपाल जिला प्रशासन ने मध्य प्रदेश की राजधानी में भीख मांगने, भिक्षा देने और भिखारियों से सामान खरीदने पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की। यह कदम एक महीने पहले इंदौर में जारी किए गए इसी तरह के निर्देश के बाद उठाया गया है। भोपाल जिला कलेक्टर ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (6) की धारा 163(2) को लागू करके प्रतिबंध लागू किया। आदेश में आगे कहा गया है कि इन नियमों का कोई भी उल्लंघन 6 धारा 223 के तहत मुकदमा चलाने की ओर ले जाएगा। इंदौर के उदाहरण का अनुसरण करते हुए भोपाल ने भी सभी सार्वजनिक स्थानों पर भीख मांगने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। इस समस्या से निपटने और विस्थापित भिखारियों के लिए वैकल्पिक समाधान प्रदान करने के प्रयासों के तहत यह पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। यातायात सिग्नल, धार्मिक स्थलों और पर्यटन स्थलों पर भीख मांगने की खबरों के बाद यह प्रतिबंध लगाया गया था, जिससे यातायात बाधित होता है और दुर्घटनाएं होती हैं।

अधिकारियों ने यह भी खुलासा किया कि कई भिखारी दूसरे राज्यों से आते हैं और उनका आपराधिक रिकॉर्ड है। वे अवैध गतिविधियों में शामिल हैं, जिससे सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और आगे के खतरों को रोकने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया गया। 2018 में, दिल्ली उच्च न्यायालय ने हर्ष मंदर बनाम भारत संघ के मामले में बॉम्बे भिक्षावृत्ति निवारण अधिनियम, 1959 (जिसे एनसीटी दिल्ली ने अपनाया था) की कुछ धाराओं को असंवैधानिक घोषित कर दिया, जिससे भिक्षावृत्ति को प्रभावी रूप से अपराध मुक्त कर दिया गया, और वह देश में ऐसा करने वाला पहला न्यायालय बन गया। हालांकि, न्यायालय ने कुछ सहायक प्रावधानों को बरकरार रखा है, जहां भीख मांगना अपराध बना हुआ है, जैसे धारा 11, जो उन लोगों को दंडित करती है जो दूसरों को भीख मांगने के लिए मजबूर करते हैं। इसके अतिरिक्त, जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय ने पूर्ववर्ती राज्य के भीख मांगने के कानून को भी रद्द कर दिया। न्यायालय ने कहा कि भिखारियों को सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा नहीं माना जाना चाहिए। इसके बजाय, उनके भीख मांगने को उनकी घोर गरीबी के संकेत के रूप में देखा जाना चाहिए। न्यायालय ने कहा कि यह राज्य की विफलता है कि वह अपने नागरिकों को सबसे बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुंच सुनिश्चित नहीं कर पाया है। इसके अलावा, न्यायालय ने स्थापित किया कि भीख मांगना अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत अपनी स्थिति को संप्रेषित करने और सहायता मांगने के एक शांतिपूर्ण तरीके के रूप में संरक्षित है। इसने कहा कि कानून भीख मांगने को अपराध नहीं मानता, बल्कि गरीबी को ही अपराध मानता है।

जुलाई 2021 में बॉम्बे उच्च न्यायालय ने शारीरिक रूप से स्वस्थ भिखारियों को अपने जीवन और राष्ट्र के लिए काम करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके बाद, 2018 में दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले की तारीख के 3 साल बाद, अगस्त 2021 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भी यही टिप्पणियां की गईं, जो साबित करती हैं कि न्यायपालिका की टिप्पणियों के बावजूद भी राज्य सभी नागरिकों के लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के संवैधानिक दायित्व को पूरा करने में बहुत अनिच्छुक है। सर्वोच्च न्यायालय ने पुष्टि की है कि भीख मांगना एक सामाजिक आर्थिक समस्या है। लोग शिक्षा और रोजगार के अभाव में अपनी आजीविका चलाने के लिए मजबूर हैं। अदालत ने यह टिप्पणी करके भीख मांगने पर प्रतिबंध लगाने से इनकार कर दिया कि भिखारियों को हमारी नजरों से दूर रखना कोई समाधान नहीं है।

वर्ष 2022 में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 'स्माइल-आजीविका और उद्यम के लिये सीमांत व्यक्तियों हेतु समर्थन' नामक योजना तैयार की। इसका उद्देश्य चिकित्सा देखभाल, शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करके भिखारियों का पुनर्वास करना है, तथा 2026 तक भिखारी मुक्त भारत की दिशा में काम करना है। 2024 तक %स्माइल% के तहत 970 व्यक्तियों का पुनर्वास किया गया है, जिनमें 352 बच्चे शामिल हैं। भिक्षावृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए सरकार को पुलिस, गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) और बाल कल्याण संगठनों के बीच बेहतर समन्वय के माध्यम से भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), 2023 के तहत भीख मांगने वाले गिरोहों को खत्म करने के लिए तस्करी विरोधी कानूनों को सख्ती से लागू करने की जरूरत है। सरकार को शोषक भीख मांगने वाले सिंडिकेट को दंडित करने की भी जरूरत है। सरकार कारावास के बजाय पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित कर रही है। सरकार भिक्षावृत्ति को प्रोत्साहित करने के नुकसान के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। साथ ही बेहतर सुविधाओं के साथ सरकारी रात्रि आश्रयों की संख्या बढ़ा रही है।

भिक्षावृत्ति विरोधी कानून में मौजूदा खामियों को देखते हुए, इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए नए कानून लाने की समय की मांग है। इसमें या तो मौजूदा कानून के कुछ प्रावधानों को निरस्त किया जाए या उन्हें पूरी तरह से पुनर्वास दृष्टिकोण लाने के लिए संशोधित किया जाए। अधिनियम में दी गई परिभाषाओं को बदला जाए जो सार्वजनिक रूप से घूमना या जीविका का कोई स्पष्ट साधन नहीं जैसे शब्दों के संबंध में बहुत अस्पष्ट प्रतीत होती हैं। उन व्यक्तियों को इसके दायरे से हटा दिया जाए जो पैसा कमाने के लिए अपने कौशल का प्रदर्शन करते हैं। इसे किसी भी तरह से 'भीख मांगना' नहीं कहा जा सकता है। अन्य खामियां जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। कानून के दंडात्मक पहलू पर मौजूदा खामियों को दूर करने के संबंध में, समाज कल्याण मंत्रालय ने राज्य प्रतिनिधियों, भिक्षावृत्ति के क्षेत्र के विशेषज्ञों आदि के साथ आयोजित राष्ट्रीय परामर्श बैठकों से उभरी सिफारिशों के आधार पर निराश्रित व्यक्ति के लिए एक आदर्श कानून का मसौदा तैयार किया था। लेकिन बाद में केंद्र ने इस विधेयक को छोड़ दिया। इसलिए, हमारे पास वर्तमान में इस पर एक केंद्रीय कानून का अभाव है। जो कुछ भी मौजूद है वह भिक्षावृत्ति विरोधी दोषपूर्ण कानून हैं जो इस मुद्दे को इसके मूल कारण से संबोधित करने में सक्षम नहीं हैं। इसके बजाय केवल उन्हें अपराधी बनाते हैं, उन्हें संस्थानों में बंद करते हैं, जिससे वे शहर की नजरों से हट जाते हैं। यह केवल अस्थायी रूप से समस्या का समाधान होता है। बिना किसी दीर्घकालिक पुनर्वास के, जिससे ऐसे लोग संस्थानों/पुनर्वास केंद्रों से बाहर आने के बाद भी वही करते हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस

प्रो. रवीन्द्रनाथ तिवारी

लेखक प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय रीवा में प्राचार्य हैं।

पृथ्वी- अस्तित्व का संकट एवं समाधान

सौरमंडल में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन विभिन्न स्वरूपों में विद्यमान है। यह जीवन की विविधता पृथ्वी की अनूठी भौगोलिक, जलवायु एवं पारिस्थितिकीय विशेषताओं के कारण संभव हो सकी है। किंतु वर्तमान समय में तीव्र और अनियोजित विकास, साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक एवं असंवेदनशील दोहन ने पृथ्वी की पारिस्थितिकी संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। जल चक्र, कार्बन चक्र, जैविक चक्र तथा वायुमंडलीय संतुलन जैसे प्रमुख प्राकृतिक चक्रों में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है, जिससे जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण, वायु एवं जल प्रदूषण जैसी अनेक पर्यावरणीय समस्याएं सामने आ रही हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु त्वरित और व्यवस्थित प्रबंधन रणनीति के साथ-साथ जन-जागरूकता और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से प्रति वर्ष 22 अप्रैल को 'पृथ्वी दिवस' मनाया जाता है। यह दिवस पर्यावरण संरक्षण के महत्व को रेखांकित करता है तथा समाज को सतत विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रेरित करता है। वैश्विक पृथ्वी दिवस 2025, की थीम 'हमारी शक्ति, हमारा ग्रह' है, जो सामूहिक प्रयासों की शक्ति को रेखांकित करती है और पृथ्वी की सुरक्षा हेतु विश्व समुदाय को एकजुट होने का आह्वान करती है।

वर्तमान समय में पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए प्राकृतिक प्रक्रियाओं, उभरती हरित तकनीकों और नवीन सोच को समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और भी स्पष्ट और गंभीर रूप में सामने आए हैं, जो वैश्विक पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न कर रहे हैं। 2024 में वैश्विक महासागरों में समुद्री हीटवेव्स की आवृत्ति और तीव्रता में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई। विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार, महासागरों के सतही तापमान में निरंतर वृद्धि के कारण समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। यह स्थिति समुद्री जैव विविधता, मछली पालन और तटीय समुदायों के लिए खतरा बन गई है । वैश्विक औसत सतही तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर (1850-1900) की तुलना में वर्ष 2024 में लगभग 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा, जिससे यह अब तक का सबसे गर्म वर्ष बन गया। यह वृद्धि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग का परिणाम है। लू, बाढ़, सूखा, जंगल की आग और उष्णकटिबंधीय चक्रवात जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है, फलस्वरूप महाद्वीपों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अत्यधिक प्रभावित हुई है। इन घटनाओं के कारण कृषि उत्पादन में कमी, जल संकट, स्वास्थ्य समस्याएं और आपदा प्रबंधन की चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं है। प्लास्टिक ओवरशूट डे 2024 रिपोर्ट के अनुसार, भारत उन 12 देशों में शामिल है जो विश्व के 60 प्रतिशत प्लास्टिक कचरे का उचित प्रबंधन नहीं हो पाता हैं। भारत की प्रति व्यक्ति प्लास्टिक खपत लगभग 5.3 किलोग्राम है, जो वैश्विक औसत (20.9 किलोग्राम) से काफी कम है। भारत में लगभग 60 प्रतिशत प्लास्टिक का पुनर्चक्रण किया जाता है, परंतु इस प्रक्रिया में अनौपचारिक क्षेत्र की अधिक भागीदारी से गुणवत्ता, मानक और सुरक्षा की चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। संयुक्त राष्ट्र की विश्व जल विकास रिपोर्ट 2024 के

अनुसार, भारत की लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या 2030 तक गंभीर जल संकट का सामना कर सकती है। भारत में विश्व की 18 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जबकि उसके पास केवल 4 प्रतिशत ताजे जल संसाधन हैं। भारत दुनिया में भूजल का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है। भारत सहित विश्व की कई नदियों में जल प्रदूषण की स्थिति चिंताजनक है। गंगा, यमुना, गोदावरी, घाघरा जैसी प्रमुख नदियाँ अत्यधिक प्रदूषण का सामना कर रही हैं। भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2023 के अनुसार, देश का कुल वन और वृक्ष आवरण 8.27 लाख वर्ग किलोमीटर तक पहुँच गया है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 25.17 प्रतिशत है। भारत का लगभग 29.32 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र मरुस्थलीकरण की चपेट में है। भूमि क्षरण के प्रमुख कारणों में जलवायु परिवर्तन, अत्यधिक चराई, वनस्पति विनाश, मिट्टी का क्षरण और अनुचित कृषि पद्धतियाँ शामिल हैं। मरुस्थलीकरण से खाद्य सुरक्षा, पेयजल की उपलब्धता और ग्रामीण जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2024 में भारत में पीएम 2.5 स्तर में 7 प्रतिशत की गिरावट आयी है किंतु अभी भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक से दस गुना अधिक है। भारत के 94 शहर विश्व के 100 सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हैं। हालांकि कुछ शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार देखा गया है।

आज पृथ्वी गहरे संकट की ओर अग्रसर है, और इस संकट से उबरने की ज़िम्मेदारी संपूर्ण मानव जाति की है। पर्यावरणीय असंतुलन के कारण उत्पन्न होती जा रही वैश्विक चुनौतियों का समाधान केवल नीति या तकनीक से नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली में परिवर्तन लाकर ही संभव है। वर्तमान में विश्व भर में पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं, परंतु इन प्रयासों को और अधिक व्यापक तथा सामूहिक बनाने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति में पृथ्वी को माता के रूप में सम्मानित किया गया है। यह दृष्टिकोण केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि एक गहरी नैतिक चेतना का प्रतीक है। 'पृथिव्याः रक्षणं कार्यं, धर्मोऽयं मानवस्य च। या ध्रियन्ते जीवका यत्र सा माता पालनी सदा॥' अर्थात पृथ्वी की रक्षा करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य और धर्म है। जिस पृथ्वी पर जीवन का आधार टिका है, उस माता की सदैव रक्षा की जानी चाहिए। जब तक हम पृथ्वी को मातृत्व भाव से नहीं देखेंगे, तब तक इसके संरक्षण के लिए प्रतिबद्धता संभव नहीं। हमें अपनी जीवनशैली और सोच को पृथ्वी के अनुरूप बदलना होगा तभी सभी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और संवर्धन संभव हो सकेगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पोप फ्रांसिस का निधन

अमिताभ स.

लेखक स्तंभकार हैं।

दुनिया के सबसे छोटे देश के राजा होते हैं पोप

रोमन कैथोलिक चर्च के धर्मगुरु पोप फ्रांसिस का 88 वर्ष की आयु में सोमवार सुबह निधन हो गया है। पोप महज एक शहर नही, समूचे देश के राजा होते हैं। उनके देश का नाम वेटिकन सिटी है। महज 17 वर्ग मील में फैला यह दुनिया का सबसे छोटा देश है ! टिबर नदी के एक किनारे रोम है, तो दूसरे किनारे वेटिकन सिटी। यह साल 1377 से ईसाई धर्मगुरू पोप का निवास है।

इटली की राजधानी रोम में यूरोप के मशहूर फव्वारों में से एक ट्रेवी फाउंटेन के नजदीक गलियों से आधे घंटे की पैदल दूरी तय कर कब वेटिकन सिटी पहुंच जाते हैं, पता ही नहीं चलता। इससे पहले दिल्ली से रोम पहुंचने में करीब साढ़े 8 घंटे लगते हैं। समय के लिहाज से वेटिकन सिटी भारत से साढ़े 3 घंटे पीछे है वेटिकन परिसर पहाड़ी पर है। आधे हिस्से में हेरिटेज इमारतें हैं। इनमें सेंट पीटर्स बैसीलिका सबसे विशाल और शानदार है। इसके बीचोंबीच सेंट पीटर्स स्कवेयर है। खास दिनों पर, लोगों का हुजूम पोप के दर्शन और आशीर्वाद लेने उमड़ता है, आजकल भी उमड़ रहा होगा। पेंटिंग्स और प्रतिमाएं सजा वेटिकन सिटी का सबसे बड़ा आकर्षण ही नहीं, रोमन कैथोलिक ईसाइयों का दुनिया का सबसे बड़ा चर्च भी है। ऊपर नीले रंग का विशाल गुम्बद शोभित है, ऐन नीचे सेंट पीटर की कब्र है। यहीं एक पावन द्वार है, जिसे 'पोर्टा सेंटा' कहते हैं। इतनी भव्य है कि इसे बनने में 176 साल लग गए। सैर कराते- कराते गाइड बताने लगा, 'वेटिकन सिटी में न लोकतंत्र है, न ही राजा का राज। पोप ही सर्वोच्च है..', और बताया, '..न खेती-बाड़ी होती है, न ही कोई उद्योग है। फिर भी, छोटा-सा देश दुनिया के सबसे अमीर देशों में शुमार है।' बावजूद इसके हर धार्मिक स्थल की तरह इधर- उधर सड़कों पर भिखारी नजर आते हैं। वरना यूरोप के अन्य देशों में गरीब हैं, लेकिन कोई यूं सरेआम भीख मांगता नहीं दिखता। अमूमन दूसरे यूरोप के देशों में भिखारी कलात्मक ढंग से सज- संवर, या कुछ कलाकारी दिखा कर गुजर- बसर करते हैं।

हर यूरोपीय देश की तरह यहाँ भी घूमने का असली मजा तो पैदल ही है। कुदरती खूबसूरती हमेशा शबाब पर रहती है, मौसम खुशगवार। रंग- बिरंगे फूलों से सजी स्ट्रीट शॉप्स दिलकश हैं। बीच- बीच में फुर्र- फुर्र उड़ती गौरैया और सफेद कबूतर प्यारे लगते हैं। सड़कों पर बड़ी आलीशान कारें नहीं, छोटी- छोटी कारें ही दौड़ती हैं। महंगी बाइक्स जरूर दिखाई देती हैं। रोज हजारों सैलानी आने के बावजूद सड़कों और फुटपाथों की साफ-सफाई देख मन खुश हो जाता है। चप्पा- चप्पा एकदम सेफ है। गाइड ने बताया, '1929 से यह अलग देश है, रोम की गोद में होने के चलते इटली ही सुरक्षा मुहैया कराता है। इसकी अपनी पुलिस और फौज नहीं है। पोप की सुरक्षा का जिम्मा स्विट्जरलैंड का है।'

पवित्रता बरकरार रखने के लिए वेटिकन सिटी में सिगरेट पीने पर पूरी तरह रोक है। जगह-जगह 'सिगरेट पीना सख्त मना है' के बोर्ड लगे हैं। वैसे, चप्पा-चप्पा एकदम सेफ है। सड़कों और फुटपॉथों की साफ-सफाई देख-देख मन खुश होता है। अपने देश की तरह यहां भी टूरिस्ट प्लेस के ईद-गिर्द स्टॉलों पर सामान दुगुना-तिगुना महंगा मिलता है।

आबादी एक हजार से कम है। ज्यादातर लोग पादरी, सरकारी अफसर और सुरक्षाकर्मी हैं। पुलिसकर्मी और मेट्रो- बस ड्राइवर बांके नौजवान हैं, खूब हैंडसम। अनुशासित देश होने के बावजूद जेब्रा क्रॉसिंग पर ट्रैफिक बमुश्किल रुकता है। आगे बढ़ कर सीटी बजाते सड़क पार कर लें, तो कर लें। बाकी यूरोप से यहां एक और फर्क है कि उन देशों के नलों और होटलों के बाथरूम तक का पानी पीने लायक होता है, लेकिन यहां बोतल बंद फिल्टर वॉटर ही पीने की हिदायत दी जाती है। इसका अपना रेलवे स्टेशन, रेडियो- टी वी, बैंक और अखबार तो हैं, लेकिन करेंसी यूरो ही है। अपने डाक टिकट भी जारी करता है। पोस्टल सिस्टम इटली से बेहतर बताते हैं। डाक घरों में सैलानियों का जमघट रहता है। ई- मेल, वाट्सएप वगैरह के जमाने में सैलानी अपने-अपने घर के पते पर पोस्ट कार्ड डालते हैं। घूम- फिर कर सैलानी घर लौटते हैं तो डिलीवर कार्ड पर सबसे छोटे देश की सरकारी मोहर लगी देख, सहेज कर रख लेते हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस पर विशेष

संध्या राजपुरोहित

क्या विकास और पर्यावरण का संतुलन संभव है?

आज का युग प्रगति और विकास का है। हर देश, हर समाज और हर व्यक्ति आधुनिकता की ओर अग्रसर है। विज्ञान और तकनीक की दुनिया ने हमारे जीवन को पहले से अधिक सुविधाजनक और सक्षम बना दिया है। लेकिन इस तेज़ रफ्तार विकास की दौड़ में हम कुछ बहुत महत्वपूर्ण पीछे छोड़ते जा रहे हैं—हमारी प्रकृति, हमारे पेड़ , हमारे जंगल। जो जंगल कभी हमारी सभ्यता का आधार हुआ करते थे, वे आज विकास के नाम पर नष्ट किए जा रहे हैं। यह आलेख उन्हीं जंगलों की व्यथा को स्वर देने का एक प्रयास है, जो हर दिन, हर क्षण विकास की बलि चढ़ रहे हैं।

हर साल 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता है – यह एक ऐसा दिन है जब पूरी दुनिया मिलकर धरती के प्रति अपने कर्तव्यों को याद करती है। यह सिर्फ एक दिवस नहीं बल्कि प्रकृति से जुड़ने, उसे समझने और बचाने का एक संकल्प है। इस अवसर पर यदि किसी की भूमिका सबसे अहम मानी जाए, तो वह है — हमारे जंगल- हमारे पेड़।

आज का युग प्रगति और विकास का है। हर देश, हर समाज और हर व्यक्ति आधुनिकता की ओर अग्रसर है। विज्ञान और तकनीक की दुनिया ने हमारे जीवन को पहले से अधिक सुविधाजनक और सक्षम बना दिया है। लेकिन इस तेज़ रफ्तार विकास की दौड़ में हम कुछ बहुत महत्वपूर्ण पीछे छोड़ते जा रहे हैं—हमारी प्रकृति, हमारे पेड़ , हमारे जंगल। जो जंगल कभी हमारी सभ्यता का आधार हुआ करते थे, वे आज विकास के नाम पर नष्ट किए जा रहे हैं। यह आलेख उन्हीं जंगलों की व्यथा को स्वर देने का एक प्रयास है, जो हर दिन, हर क्षण विकास की बलि चढ़ रहे हैं।

जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं, बल्कि पृथ्वी का फेफड़े हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर के शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जलवायु को संतुलित रखते हैं, मिट्टी के क्षरण को रोकते हैं, जल स्रोतों को पोषित करते हैं और लाखों जीवों को आवास देते हैं। जंगलों का महत्त्व केवल हरियाली तक सीमित नहीं है। ये पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। वे न केवल हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं, बल्कि लाखों प्रजातियों के लिए आवास, नदियों के स्रोतों की रक्षा और जलवायु नियंत्रण में भी सहायक होते हैं। हमारे देश भारत में, जहाँ प्रकृति को सदैव देवी-देवताओं का रूप माना गया है, वहाँ जंगल केवल पर्यावरणीय संसाधन नहीं, अपितु सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व भी रखते हैं। 'अरण्यक', 'वनवास', 'वन देवता' जैसे शब्द हमारी सांस्कृतिक स्मृति में आज भी जीवित हैं।

विकास की परिभाषा जब हम आधुनिक संदर्भ में देखते हैं, तो उसमें आधारभूत ढाँचे का विस्तार, औद्योगीकरण, शहरीकरण और आर्थिक वृद्धि जैसे संकेतक शामिल होते हैं। लेकिन यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह विकास एकतरफा है? क्या यह विकास प्रकृति को दरकिनार कर के ही संभव है? जब एक सड़क या बाँध के लिए हजारों पेड़ काटे जाते हैं, जब खनन के लिए घने जंगलों को नष्ट कर दिया जाता है, तब क्या वास्तव में हम आगे बढ़ रहे हैं, या खुद के ही भविष्य को खोखला कर रहे हैं? संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार, विश्व में हर वर्ष लगभग एक करोड़ हेक्टेयर जंगल समाप्त हो जाते हैं। भारत में भी स्थिति चिंताजनक है। वन क्षेत्र बढ़ने के जो दावे किए जाते हैं, वे अकसर शहरी वृक्षारोपण या झाड़ियों को शामिल करके किए जाते हैं, न कि जैवविविधता से परिपूर्ण प्राकृतिक वनों को आधार बनाकर। दरअसल, विकास की आड़ में जंगलों का विनाश एक सामान्य प्रक्रिया बनती जा रही है।

भारत जैसे विकासशील देश में औद्योगीकरण एक बड़ी आवश्यकता है। लेकिन खनन, निर्माण, परिवहन और ऊर्जा परियोजनाओं के नाम पर जो वनों की कटाई हो रही है, वह असंतुलित विकास की ओर संकेत करती है। जंगलों के स्थान पर जब नई रिहायशी कॉलोनियाँ, सड़कें या फैक्ट्रियाँ बनाई जाती हैं, तो यह सोचा ही नहीं जाता कि हम क्या खो रहे हैं। यह केवल हरियाली नहीं, बल्कि जीवन के अनेक रूप हैं जो नष्ट हो जाते हैं—प्रकृति के संतुलन से लेकर जैव विविधता तक।

वनों की कटाई का प्रभाव बहुआयामी होता है। सबसे पहले इसका सीधा प्रभाव जलवायु पर पड़ता है। जंगल वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर के ग्लोबल वॉर्मिंग को नियंत्रित करते हैं। जब पेड़ काटे जाते हैं, तो वातावरण में कार्बन की मात्रा बढ़ जाती है और पृथ्वी का तापमान तेज़ी से बढ़ता है। इसका परिणाम जलवायु परिवर्तन, असमय वर्षा, सूखा और बाढ़ के रूप में सामने आता है।

जंगलों की अनुपस्थिति से वर्षा चक्र प्रभावित होता है। पेड़ वाष्पोत्सर्जन द्वारा बादलों के निर्माण में सहायक होते हैं, और जलवायु को नम रखते हैं। जब जंगल समाप्त हो जाते हैं, तो वर्षा की मात्रा कम हो जाती है या असंतुलित हो जाती है। इससे कृषि प्रभावित होती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है।

जंगल जैव विविधता के सबसे बड़े केंद्र होते हैं। लाखों जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ जंगलों में निवास करती हैं। जब जंगल कटते हैं, तो उनके प्राकृतिक आवास समाप्त हो जाते हैं। इससे कई प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर पहुँच जाती हैं। यह केवल पशु-पक्षियों का नुकसान नहीं है, बल्कि पूरे पारिस्थितिक तंत्र की क्षति है, जिसका प्रभाव अंतत: मानव जीवन पर ही पड़ता है।

वनों की कटाई का सबसे अधिक असर उन समुदायों पर होता है जो सदियों से जंगलों में रहते आए हैं—आदिवासी और वनवासी। उनका जीवन, उनकी संस्कृति, उनकी आस्था और आजीविका सब कुछ जंगलों पर निर्भर होती है। जब जंगल उजड़ते हैं, तो ये समुदाय न केवल अपना घर खो देते हैं, बल्कि उनकी अस्मिता और पहचान पर भी संकट आ जाता है। विस्थापन और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

भारत में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ विकास परियोजनाओं के कारण जंगलों का भारी नुकसान हुआ है। मुंबई की आरे कॉलोनी में मेट्रो कारशेड के लिए हज़ारों पेड़ों की कटाई की गई, जिसका स्थानीय नागरिकों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने विरोध किया। उत्तराखंड में चारधाम परियोजना के अंतर्गत सड़क चौड़ीकरण के लिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे गए, जिससे भूस्खलन की घटनाएँ बढ़ गईं। छत्तीसगढ़, ओडिशा और झारखंड जैसे खनिज संपन्न राज्यों में खनन के कारण जंगल और वहाँ रहने वाले समुदाय संकट में हैं।

इन सबके बीच एक सवाल उठता है—क्या विकास और पर्यावरण का संतुलन संभव है? इसका उत्तर है—हां, यदि हम सतत विकास की ओर बढ़ें। सतत विकास का अर्थ है—ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों से समझौता न करे। इसके लिए हमें विकास परियोजनाओं में पर्यावरणीय प्रभाव का उचित मूल्यांकन करना होगा। निर्माण कार्यों से पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि जंगलों की क्षति न्यूनतम हो और जितनी क्षति हो, उसकी भरपाई वृक्षारोपण और पुनर्वनीकरण द्वारा की जाए।साथ ही, वनों की सुरक्षा में स्थानीय समुदायों की भूमिका को भी सशक्त करना होगा। आदिवासी और ग्रामीण समाज जंगलों के सबसे अच्छे संरक्षक होते हैं, क्योंकि उनका जीवन उससे जुड़ा होता है। जब उन्हें निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाया जाएगा, तो संरक्षण के प्रयास अधिक प्रभावी होंगे।

तकनीकी विकास का उपयोग भी जंगलों की निगरानी और संरक्षण में किया जा सकता है। सैटेलाइट इमेजिंग, ड्रोन सर्वेक्षण और ब्लॉक्स तकनीकों के माध्यम से जंगलों की स्थिति पर नजर रखी जा सकती है, अवैध कटाई रोकी जा सकती है, और संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान कर के वहां विशेष संरक्षण उपाय अपनाए जा सकते हैं।

सरकारों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, उनका प्रभावी क्रियान्वयन और जन-जागरूकता भी आवश्यक है। इसके साथ-साथ नागरिकों की जिम्मेदारी भी बनती है कि वे प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें। पेड़ लगाना, प्लास्टिक का कम प्रयोग, पानी की बचत, जैविक उत्पादों का उपयोग और स्थानीय संसाधनों को प्राथमिकता देना—ये छोटे-छोटे कदम भी बड़ा असर डाल सकते हैं। अंततः कहा जा सकता है कि विकास की दौड़ में अगर हमने जंगलों को पूरी तरह खो दिया, तो यह प्रगति नहीं, विनाश का संकेत होगा। जंगल केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, जीवन के आधार हैं। वे हमारे अस्तित्व का मूल हैं। यदि हमें अपने भविष्य को सुरक्षित रखना है, तो जंगलों की रक्षा करना अनिवार्य है। जंगल बचेंगे, तभी जीवन बचेगा। और जब जीवन बचेगा, तभी विकास का कोई अर्थ होगा। पृथ्वी एक सुंदर ग्रह है, लेकिन इसकी सुंदरता तभी तक है जब तक यह हरी-भरी है। पेड़ न केवल पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखते हैं, बल्कि हमारे अस्तित्व की डोर भी थामे हुए हैं। अगर हम सच में पृथ्वी से प्रेम करते हैं, तो हमें पेड़ों से भी प्रेम करना होगा — उन्हें लगाना, सहेजना और उनकी रक्षा करना होगी। क्योंकि जब तक जंगल जिंदा हैं, तब तक जीवन की साँसे चलती हैं। जंगल विकास में बाधा नहीं, बल्कि सहायक हैं। यदि हमने आज चेतना नहीं दिखाई, तो आने वाली पीढ़ियाँ न तो स्वच्छ वायु में साँस ले पाएंगी, न ही हरियाली देख पाएंगी। विकास तभी सार्थक है जब वह जीवन को बेहतर बनाए, न कि उसे संकट में डाले।

आज का युग विकास और प्रगति का है। देश दर देश, राज्य दर राज्य, गाँव से लेकर शहर तक, हर कोना आधुनिकता की दौड़ में आगे निकलने को तत्पर है। नए-नए बाँध बन रहे हैं, राजमार्ग विस्तारित हो रहे हैं, और शहरीकरण की लहरें गाँवों तक पहुँच रही हैं। लेकिन इस विकास के चमचमाते सपनों की नींव में एक गहरी सच्चाई छुपी है—जंगलों का लगातार होता विनाश। विकास की दौड़ में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जंगलों का होना ही जीवन का होना है। पेड़ कटने की गिनती यदि प्रगति बन जाए, तो यह हमारे समय की सबसे दुखद विडंबना होगी। इसलिए आज समय है एक सामूहिक निर्णय का—जहाँ हम कहें— विकास चाहिए, लेकिन जंगलों की कीमत पर नहीं।

विश्व पृथ्वी दिवस विशेष

अस्मिता सिंह

अब क्यों नहीं होते पर्यावरण के लिए प्रभावी जनआंदोलन

ये जंगल हमारा मायका है, हमें गोली मार दो और काट लो हमारा मायका- ये शब्द चिपको आंदोलन की प्रतीक बन चुकी गौरा देवी ने पेड़ों से चिपककर तब कहे थे, जब रैणी गाँव में 2451 पेड़ काटने के आदेश के बाद ठेकेदारों से गाँव की महिलाओं का सामना हुआ। इन महिलाओं और बच्चों ने अपनी जान की बाजी लगाकर उस जंगल को बचाया और इतिहास में मिसाल बना चिपको आंदोलन। इस आंदोलन ने यह साबित किया कि जब लोग एकजुट होते हैं, तो वे प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा कर सकते हैं, भले ही वे एक छोटे से गाँव में क्यों न हों। 51 साल पहले का यह जनआंदोलन भारत में पर्यावरण संरक्षण के इतिहास का एक अहम मोड़ था, एक नवीन जागृति थी और हम समझने लगे कि पर्यावरण का बचाव क्यों जरूरी है। इसके परिणामस्वरूप 1980 में वन संरक्षण अधिनियम बनाया गया, जिससे वनों की कटाई पर रोक लगी।

10 साल बाद इसी चिपको जनआंदोलन के दक्षिणी संस्करण अप्पिको में भी लोग कर्नाटक के कलसे जंगल को बचाने के लिए पेड़ों के गले लग गए और अंतत: जंगल काटने पर रोक लगाई गई। बहुत दिलचस्प है कि पेड़ों से लिपटकर पेड़ बचाने की परंपरा हमें इन दोनों आंदोलनों से 300 साल पहले राजस्थान में मिलती है। भारत के पहले पर्यावरणविद् विश्नोई संप्रदाय ने खेजड़ी के वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इन पर्यावरणीय आंदोलनों ने हमेशा समाज को यह याद दिलाया है कि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और पारिस्थितिकी तंत्र का क्षरण अब हमारी चेतना का हिस्सा बन चुका है।

इन आंदोलनों ने न केवल स्थानीय समुदायों को जागरूक किया, बल्कि उन्होंने पर्यावरण के मुद्दे पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहस छेड़ी। पर्यावरण संरक्षण की एक दीर्घ परंपरा हमारे धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन में रची बसी होने के बावजूद भी वर्तमान में भारत के कई महत्वपूर्ण जंगलों का विनाश विकास के नाम पर किया जा रहा है, जिसकी कीमत त्वरित रूप में जंगली जानवर, वनस्पति और जीव-जन्तु चुका रहे हैं, किन्तु अंतत: मनुष्य इसकी कीमत चुकाने के लिए तैयार रहे। चाहे मेट्रो प्रोजेक्ट के लिए मुंबई का आरे जंगल हो या बस्तर का हसदेव और अब हैदराबाद विश्वविद्यालय का कांचा गाछीबोवली जंगल। व्यापारिक गतिविधियाँ और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के नाम पर हजारों पेड़ों की बलि ले ली गई। कांचा गाछीबोवली में जानवरों का करूण रुदन हृदयविदारक था। हालांकि माननीय सुप्रीम कोर्ट ने पेड़ों की कटाई पर रोक लगाई है, लेकिन मामला पूरी तरह से सुलझा नहीं है।चिपको, अप्पिको या नर्मदा बचाओ आंदोलन हो, इस प्रकार के प्रभावी जनआंदोलन वर्तमान समय में क्यों नहीं हो रहे, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध हों और सुधार संभव हो? इसके कई कारण हमें नजर आते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से लोगों का जुड़ाव सीधे जंगल से न होना है। अब लोगों की प्राथमिकता सिर्फ आर्थिक और सामाजिक उन्नति है। आधुनिकीकरण ने न सिर्फ शहरों की बल्कि गांवों की भी जंगलों से निर्भरता को कम कर दिया है। तकनीकी के विकास से सभी वस्तुओं की ऑनलाइन पहुँच ने लोगों की जंगलों तक सीधी पहुँच को खत्म कर दिया है।

अब जंगलों से जुड़े मुद्दे सिर्फ कुछ समय सोशल मीडिया पर

ट्रेंड करने भर के रह गए हैं। सोशल मीडिया ने जहां हर घटना और सूचना की पहुँच को विस्तृत किया है, वहीं लोगों की भौतिक उपस्थिति को खत्म कर दिया है। अब हर व्यक्ति अपने मोबाइल फोन के माध्यम से रील शेयर करके अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहा है, अब विरोध प्रदर्शन करने के लिए बहुत ही कम या न के बराबर लोग जुटते हैं। अन्य सभी आंदोलनों में लोगों की भौतिक उपस्थिति ने ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जन जागरूकता की कमी के कारण भी कई लोगों को यह समझ में नहीं आता कि पर्यावरणीय संकट उनके जीवन को सीधे प्रभावित कर रहा है। इसीलिए वे आंदोलन में शामिल नहीं होते, क्योंकि उन्हें यह मुद्दा उतना गंभीर नहीं लगता। आर्थिक विकास मॉडल में आर्थिक लाभ को प्राथमिकता देने पर सरकारें और कंपनियां अक्सर पर्यावरणीय नुकसान को नजरअंदाज करते हुए विकास परियोजनाओं को आगे बढ़ाती हैं।

सरकारें पर्यावरणीय मुद्दों को प्राथमिकता नहीं देतीं, और न ही वे हमेशा प्रभावी कदम उठाती हैं। इससे भी लोगों के बीच पर्यावरणीय आंदोलनों को लेकर उत्साह कम हुआ है। अधिकांश आंदोलन दीर्घकालिक प्रभाव नहीं दिखा पाते, क्योंकि समय के साथ सरकारी नीतियाँ बदलती हैं और आंदोलन कमजोर पड़ जाते हैं। वर्तमान समय में, पर्यावरणीय संकट केवल एक मुद्दा नहीं, बल्कि हमारे जीवन और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से जुड़ा सवाल बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जंगलों की अंधाधुंध कटाई, और जल संकट जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं, और इनका सीधा असर लोगों के जीवन पर पड़ रहा है। ऐसे में, पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता फैलाना बेहद जरूरी है, ताकि लोग इन संकटों को समझें और उनके समाधान के लिए सक्रिय कदम उठा सकें। पर्यावरणीय संकट से निपटने के लिए सिर्फ सरकारों और संगठनों का प्रयास पर्याप्त नहीं होगा। स्थानीय समुदायों को भी अपने पारंपरिक ज्ञान और संसाधनों के संरक्षण में सक्रिय रूप से भागीदार बनना आवश्यक है। सामूहिक प्रयास के रूप में नागरिक, संगठनों और समुदायों को एकजुट होकर पर्यावरणीय संरक्षण की दिशा में काम करना होगा। सरकारों को भी इस दिशा में अपनी नीतियाँ बनाने और लागू करने में तत्पर रहना चाहिए। इसके साथ ही, इन नीतियों पर कड़ी निगरानी और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। अगर हम आज इन कदमों को नहीं उठाते, तो आनेवाले समय में यह संकट और भी गंभीर हो सकता है। इसलिए, पर्यावरणीय संरक्षण को प्राथमिकता देना और हर नागरिक को इसका हिस्सा बनाना, समय की जरूरत बन चुका है।

विश्व पृथ्वी दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं।

धधकती धरती- विकास की दौड़ या विनाश की ओर?

न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी तथा मौसम का निरन्तर बिगड़ता मिजाज गंभीर चिंता का सबब बना है। हालांकि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विगत वर्षों में दुनियाभर में दोहा, कोपेनहेगन, कानकुन इत्यादि बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन होते रहे हैं किन्तु उसके बावजूद इस दिशा में अभी तक ठोस कदम उठते नहीं देखे गए हैं। दरअसल वास्तविकता यही है कि राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रकृति के बिगड़ते मिजाज को लेकर चर्चाएं और चिंताएं तो बहुत होती हैं, तरह-तरह के संकल्प भी दोहराये जाते हैं किन्तु सुख-संसाधनों की अंधी चाहत, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, अनियंत्रित औद्योगिक विकास और रोजगार के अधिकाधिक अवसर पैदा करने के दबाव के चलते इस तरह की चर्चाएं और चिंताएं अर्थहीन होकर रह जाती हैं। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण को लेकर लोगों में जागरूकता पैदान करने तथा पृथ्वी को बचाने के लिए प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को 'विश्व पृथ्वी दिवस' मनाया जाता है।

प्रकृति पिछले कुछ समय से बार-बार भयानक आंधियों, तूफान और ओलावृष्टि के रूप में यह गंभीर संकेत देती रही है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहां किस कदर बदल जाए, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते दुनियाभर में मौसम का मिजाज किस कदर बदल रहा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उत्तरी ध्रुव के तापमान में एक-दो नहीं बल्कि करीब 30 डिग्री तक की बढ़ोतरी देखी गई।

धरती का तापमान यदि इसी प्रकार साल दर साल बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा क्योंकि हमें यह बखूबी समझ लेना होगा कि जो प्रकृति हमें उपहार स्वरूप शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध मिट्टी तथा ढ़ेरों जनोपयोगी चीजें दे रही है, अगर मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पैदा किए जा रहे पर्यावरण संकट के चलते प्रकृति कुपित होती है तो उसे सब कुछ नष्ट कर डालने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। करीब दो दशक पहले देश के कई राज्यों में जहां अप्रैल माह में अधिकतम तापमान औसतन 32-33 डिग्री रहता था, अब वह 40 के पार रहने लगा है। मौसम विभाग का तो अनुमान है कि अगले तीन दशकों में इन राज्यों में तापमान में वृद्धि 5 डिग्री तक

दर्ज की जा सकती है और इसी प्रकार तापमान बढ़ता रहा तो एक ओर जहां जंगलों में आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी, वहीं धरती का करीब 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे की चपेट में आ जाएगा तथा एक चौथाई हिस्सा रेगिस्तान बन जाएगा, जिसके दायरे में भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य अमेरिका, दक्षिण आस्ट्रेलिया, दक्षिण यूरोप इत्यादि आएंगे।

सवाल यह है कि धरती का तापमान बढ़ते जाने के प्रमुख कारण क्या हैं? 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक के मुताबिक इसका सबसे अहम कारण है ग्लोबल वार्मिंग, जो तमाम तरह की सुख-सुविधाएं व संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों की ही देन है। पेट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड मौजूद है, जिसकी मौसम का मिजाज बिगाड़ने में अहम भूमिका है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील किया जाता रहा है। एक और अहम कारण है बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि। जहां 20वीं सदी में वैश्विक जनसंख्या करीब 1.7 अरब थी, अब बढ़कर 8 अरब से भी ज्यादा हो चुकी है। अब सोचने वाली बात यह है कि धरती का क्षेत्रफल तो उतना ही रहेगा, इसलिए कई गुना बढ़ी आबादी के रहने और उसकी जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है, इससे पर्यावरण की सेहत पर जो जबरदस्त प्रहार हुआ है, उसी का परिणाम है कि धरती बुरी तरह धधक रही है। ब्रिटेन के प्रख्यात भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग की इस टिप्पणी को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है कि यदि मानव जाति की जनसंख्या इसी कदर बढ़ती रही और ऊर्जा की खपत दिन-प्रतिदिन इसी प्रकार होती रही तो करीब 600 वर्षों बाद पृथ्वी आग का गोला बनकर रह जाएगी।

धरती का तापमान बढ़ते जाने का ही दुष्परिणाम है कि ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्रों का जलस्तर बढ़ने के कारण दुनिया के कई शहरों के जलमग्न होने की आशंका जताई जाने लगी है। बहरहाल, अगर प्रकृति से खिलवाड़ कर पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर हम स्वयं इन समस्याओं का कारण बने हैं और हम वाकई गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर चिंतित हैं तो इन समस्याओं का निवारण भी हमें ही करना होगा ताकि हम प्रकृपि के प्रकोप का भाजन होने से बच सकें अन्यथा प्रकृति से जिस बड़े पैमाने पर खिलवाड़ हो रहा है, उसका खामियाजा समस्त मानव जाति को अपने विनाश से चुकाना पड़ेगा।

बैतूल पहुंचे साहू महा संगठन के युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष संगठन विस्तार को लेकर की चर्चा

बैतूल। साहू महा संगठन के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष अशोक नोखेलाल साहू सोमवार को बैतूल पहुंचे। यहां उन्होंने सर्वप्रथम श्री रुक्मणि बालाजी पुरम मंदिर में दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। दर्शन के पश्चात उन्होंने जिले के प्रमुख युवा समाजसेवियों से भेंट कर संगठन को और अधिक सशक्त बनाने को लेकर विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर युवा समाजसेवी राजा साहू, हेमंत साहू और अशोक साहू महाराज विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक में संगठनात्मक मजबूती, सामाजिक एकता और युवाओं की भूमिका जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। अशोक नोखेलाल साहू ने इस अवसर पर छिंदवाड़ा में आगामी दिनों में होने वाले बड़े धार्मिक आयोजन की जानकारी दी और बैतूल जिले के समस्त स्वजातीय समाजसेवियों को इस आयोजन में सपरिवार आमंत्रित किया।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

बैतूल। सडक़ हादसे में एक 40 साल के व्यक्ति की मौत हो गई। रविवार रात दूधिया चिचोली निवासी किशन मुंशी अपनी बहन के घर से बाइक पर वापस लौट रहे थे। इसी दौरान नंदा जोड़ के पास अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में उनके सिर में गंभीर चोट आई। घायल अवस्था में सडक़ पर पड़े किशन को वन विभाग के कर्मचारी ने देखा। उन्होंने तत्काल उन्हें भीमपुर अस्पताल पहुंचाया। हालत गंभीर होने पर किशन को जिला अस्पताल रेफर किया गया था। सोमवार की सुबह उसने दम तोड़ दिया। परिवार वालों के मुताबिक किशन अपने बहन के घर ढोढरा गए थे। रात को बाइक से अकेले ही दूधिया गांव लौट रहे थे। नान्दा जोड़ के पास किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। उन्हें सडक़ पर पड़ा देख रात गश्त पर निकले वन कर्मी ने भीमपुर सीएचसी पहुंचाया। उसके जेब में दूधिया का पता मिलने पर वन कर्मी ने घायल किशन का फोटो गांव वालों को भेजा, जिससे पहचान हो सकी। इसके बाद परिजन अस्पताल पहुंचे। गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल रेफर किया गया। जहां उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई।

सी.एम. राइज विद्यालय में प्रवेश हेतु लॉटरी प्रक्रिया कल

बैतूल। सी.एम. राइज शा.कृषि उ.मा.वि. बैतूल बाजार में कक्षा 1लीं से 11वीं में जमा किए गए आवेदनों से प्रवेश हेतु लॉटरी प्रक्रिया 23 अप्रैल 2025 दिन बुधवार सुबह 10 बजे से संस्था के सभागार कक्ष में पूर्ण की जाएंगी। प्राचार्य द्वारा समस्त पालकों/विद्यार्थियों से इस प्रक्रिया में उपस्थित होने की अपील की है।

एनएचएम संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों की अनिश्चितकालीन हड़ताल आज से

- चिकित्सालय चिचोली सहित मैदानी स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं होंगी प्रभावित

बैतूल। एनएचएम संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों ने एक बार फिर हड़ताल का रुख कर लिया है। संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी पंकज डोंगरे ने बताया कि तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा 2 साल पूर्व संविदा कर्मियों की महापंचायत आयोजित कर संविदा कर्मचारियों को विभिन्न स्वास्थ्य सौगात दी थी पर उनमें से एकमात्र वेतनमान निर्धारित किया गया जबकि अन्य एनपीएस, अनुकम्पा, स्वास्थ्य बीमा जैसी महत्वपूर्ण मांगे लंबित है जिससे संविदा जीवन अंधकारमय है और संविदा कर्मचारी आक्रोशित है। प्रांतीय आह्वान पर आज 22 अप्रैल से प्रदेश जिले और ब्लॉक के सभी संविदा कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर रहेंगे। सोमवार को ब्लॉक चिचोली के समस्त संविदा कर्मचारियों ने संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ ब्लॉक अध्यक्ष गजराज रघुवंशी के नेतृत्व में सीबीएमओ चिचोली को हड़ताल सूचना पत्र ज्ञापित किया। भीषण गर्मी में जहां बीमारियों की समस्या बनती है, ऐसे में संविदा कर्मचारियों द्वारा हड़ताल पर जाना आमजन के लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है। वहीं आयुष्मान कार्ड, टीकाकरण कार्य, परिवार नियोजन, गर्भवती जांच उपचार, सहित आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं बाधित होंगी। संविदा कर्मियों ने आमजन को होने वाली स्वास्थ्य असुविधा के लिए खेद व्यक्त कर इसके लिए शासन प्रशासन की जिम्मेदारी निर्धारित की है।

घर में खेलते समय अचानक हुआ विस्फोट,चार बच्चे गंभीर रूप से झुलसे

बैतूल। जिला मुख्यालय के समीपस्थ बैतूलबाजार थाना क्षेत्र के अंतर्गत मिलानपुर गांव में सोमवार दोपहर करीब 12 बजे एक घर में अचानक विस्फोट हो गया। जिसमें चार बच्चे गंभीर रूप से झुलस गए। उनके हाथ-पैर में गहरे घाव हो गए। परिजनों का कहना है कि बच्चे खराब बैटरी लेकर आए थे और खेलने के दौरान ये हादसा हो गया।

वहीं जिला अस्पताल के डॉक्टर सहित अन्य लोग पटाखे या डायनामाइट जैसा विस्फोटक होने की आशंका जता रहे है। घायलों में तीन परिवारों के चार बच्चे शामिल है। इनमें बबीता पिता मनीष सरेआम (7 वर्ष), नीलम पिता रमेश सरेआम (13), अंकिता आकाश सलामे (6) और अंकित आकाश सलामे शामिल है, विस्फोट से उनके हाथ-पैर में गहरे जख्म हुए हैं। बच्चों को अस्पताल लेकर पहुंची अंकित की मां संगीता सलामे ने बताया कि ये घर के नजदीक नदी की तरफ से खेलते हुए आ रहे थे। मैंने कहा कि बाहर धूप है, घर में ही खेलो। तभी पीछे के कमरे की तरफ से धमाका हुआ। मैं भागकर वहां पहुंची, तो वहां काला-काला था बैटरी जैसा कुछ। वहीं परिजन आकाश ने बताया कि बच्चे बाइक की खराब बैटरी घर लेकर आए थे। उसी में विस्फोट हुआ है। जिला अस्पताल के सर्जिकल स्पेशलिस्ट डॉ. रंजीत राठौर का कहना है कि बच्चों के हाथ-पैर में एक सेंटीमीटर तक के गहरे जख्म है। किसी बैटरी में ब्लास्ट से इस तरह की इंजुरी संभव नहीं होती है। डायनामाइट या पटाखे जैसी वस्तु के फटने से बच्चों को चोट आई हो सकती है।

वहीं जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे ने बताया कि सोमवार को दोपहर 1.30 बजे के लगभग 4 बच्चे जिला अस्पताल बैतूल अपने परिजनों के साथ लाए गए। इन 4 बच्चों में से 1 ही परिवार के 2 बच्चे एवं अन्य 2 अलग-अलग परिवारों से हैं। ये बच्चे अपने घर के नजदीक खेल रहे थे और खेलने वाली सामग्री में पटाखे जैसा विस्फोट होने से हादसे का शिकार हुए। घायलों में नीलम पिता रमेश उम्र 13 वर्ष को मल्टीपल इंज्यूरी है। जिनकी सीधी आंख में स्पेलरो कॉर्नियल इंजूरी है। जिन्हें उच्च संस्था गांधी मेडिकल कॉलेज के नेत्र विभाग में प्राथमिक उपचार देकर रेफर किया गया। बबीता पिता श्री मनीष उम्र 8 वर्ष को सीधी आंख में घाव हैं और हाथों तथा पैरों में घिसड़न है। इनकी हालत स्थिर है तथा इनका जिला चिकित्सालय बैतूल में उपचार जारी है।

अंकिता पिता श्री आकाश उम्र 7 वर्ष इन्हें भी हाथों में घिसड़न के घाव हैं। अंकित पिता श्री आकाश उम्र 6 वर्ष इन्हें बायें घुटन में चोट व सूजन तथा हाथ-पैर में हल्की घिसड़न है। एक्स-रे के उपरात हड्डी रोग विशेषज्ञ द्वारा इनका उपचार जिला चिकित्सालय में जारी है। बच्चे चिल्ड्रन सर्जिकल वार्ड में एडमिट है, जिन्हें नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं सर्जिकल विशेषज्ञ की देखरेख में रखा गया है। इधर बैतूलबाजार थाना टीआई अंजना धुर्वे ने बताया कि हादसे में घायल हुए बच्चे आपस में रिश्तेदार हैं। प्रारंभिक तौर पर यह बैटरी का विस्फोट बताया जा रहा है। फिर भी पुलिस विस्फोट की बारीकी से जांच कर रही है कि इसमें कोई संदिग्ध वस्तु तो नहीं है।

इनका कहना है -

मिलनपुर गांव के बच्चों ने खेल-खेल में बैटरी को सफेद चिंगारी निकालने वाले पत्थर से जोड़ा, तो वह ब्लास्ट हो गई, जिससे बच्चों के शरीर पर कई जगह जख्म हुए है, इनमें से एक बच्चे के आंख में गंभीर चोट आने से उसे भोपाल रेफर किया गया है।

- डॉ रंजीत राठौर, सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

- प्रारंभिक तौर पर यह बैटरी का विस्फोट बताया जा रहा है। फिर भी पुलिस विस्फोट की बारीकी से जांच कर रही है कि इसमें कोई संदिग्ध वस्तु तो नहीं है।

अंजना धुर्वे, थाना प्रभारी बैतूलबाजार

सतलोक आश्रम में 4 अनोखे दहेज मुक्त विवाह हुए संपन्न

बैतूल। जब शादी की बात आती है तब एक गहरी चिंता में डूबे पिता का चेहरा सामने आता है क्योंकि दहेज रूपी दानव ने उनके ऊपर बेटियों को बोझ बना दिया है। दूसरी तरफ संत रामपाल महाराज के सानिध्य में होने वाले विवाह एक पिता की सारी ही चिंता समाप्त कर देते हैं, जिससे बेटियां पिता को बोझ नहीं लगतीं। ऐसा ही विवाह सतलोक आश्रम बैतूल में देखने को मिला जहां 4 जोड़े महज 17 मिनट में ही परिणय सूत्र में बंध गए। साधारण से कपड़ों में दूल्हा व दुल्हन अपने गुरु की तस्वीर के आगे हाथ जोड़ कर बैठे और एक दूसरे के हाथ में रक्षा सूत्र बांधते हुए असुर निकंदन रमैनी के माध्यम से यह विवाह संपन्न हो गया, जहां ना कोई पंडित था न ही हवन कुंड। अंशुल दास दमोह का विवाह यामिनी दासी बैतूल, राजा दास अशोकनगर का विवाह सोनम दासी अशोकनगर, रोशन दास अहमदाबाद का विवाह माधुरी दासी सिवनी, संदीप दास अमरावती का विवाह पंकीता दासी बैतूल से विवाह बिना दान दहेज के संपन्न हुआ। यहां शामिल हुए सैकड़ों अनुपदेशी लोग बिना ताम-झाम, बिना दहेज के साधारण विवाह के साक्षी बने। राज्य सेवादार भक्त विष्णु दास की बेटी का विवाह भी इसी कड़ी में साधारण तरीके से हुआ जिसको लेकर विष्णु दास ने बताया कि ऐसा नहीं है कि हम अपनी बेटी को दहेज नहीं दे सकते बल्कि हमारे गुरुदेव रामपाल महाराज का मिशन है कि हमें भारत को दहेज मुक्त बनाना है ताकि वे पिता जो दहेज देने में सक्षम नहीं हैं, वे कर्ज तले दबने से बच सकें और सभी बेटियां ससुराल वालों की प्रताडऩा के कारण आत्महत्या का विचार छोड़ अपना जीवन खुशी से जी सकें। वर वधू पक्ष के सभी रिश्तेदारों व कई जनप्रतिनिधि ने इस अनोखे विवाह की तारीफ करते हुए संत रामपाल जी महाराज के द्वारा किए जा रहे समाज सुधार के कार्यों की सराहना की।

बैतूल में बाबूजी महाराज की 126वीं जयंती पर होगा सामूहिक ध्यान कार्यक्रम, सामाजिक संस्थाओं का सम्मान

ध्यान वह पुल है जो आत्मा को शांति और मन को स्थिरता से जोड़ता है - डॉ आनंद मालवीय

बैतूल। आगामी 30 अप्रैल को हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र वृंदावन नगर रानीपुर रोड बैतूल में श्री रामचंद्र मिशन के संस्थापक बाबूजी महाराज की 126वीं जयंती पर सामूहिक ध्यान कार्यक्रम आयोजित होगा। कार्यक्रम में सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्थाओं को सम्मानित किया जाएगा। संस्था के आशीष पचौरी ने बताया कि इस कार्यक्रम में हरदा से हार्टफुलनेस संस्थान के प्रशिक्षक गोरख सर जिला मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहेंगे, जो उपस्थित लोगों को हार्टफुलनेस ध्यान की तकनीक के साथ ध्यान से हमारे जीवन में किस प्रकार के बदलाव संभव हैं, इसके बारे में बताएंगे। साथ ही ध्यान से संबंधित प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया जाएगा। जिसमें उपस्थित लोगों के प्रश्नों का जवाब भी श्री गोरख द्वारा दिया जाएगा। कमल नयन अग्रवाल ने बताया कि कार्यक्रम में ध्यान के पश्चात उन सामाजिक संस्थाओं को भी सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों जैसे पर्यावरण, रक्तदान, पॉलिथीन मुक्त शहर, पर्यावरण संरक्षण, जल संवर्धन जैसे विषय पर कार्य कर जन जागरूकता के कार्य किए हैं।

बैठक में प्रमोद अग्रवाल, संजय शुक्ला, ध्यान केंद्र से कमल नयन अग्रवाल, डॉ. आनंद मालवीय आशीष पचौरी, डॉ शिशिर वाडेकर, तूलिका पचौरी, निमिषा शुक्ला, प्रमिला धोत्रे, समाजसेवी दीप मालवीय, दीपा मालवीय, राजू मालवीय, शैलेंद्र बिहारिया, हेमा सिंह चौहान, भूपेन पवार, इंद्रदेव कावडक़र आद अदि समाजसेवी उपस्थित थे। सभी ने बैठक में निर्णय लिया कि हम सभी अधिक से अधिक लोगों को सामूहिक ध्यान में शामिल होने के लिए आमंत्रित करेंगे और नियमित ध्यान करने हेतु प्रेरित करेंगे। डॉ आनंद मालवीय ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए नियमित प्राणायाम एवं ध्यान करना बहुत ही आवश्यक है इससे हमारा बीपी नॉर्मल रहता है एवं मस्तिष्क भी शांत रहता है।

बैतूल के तैराक रोशन सूर्यवंशी को ओपन स्विमिंग में मिला मेडल और प्रमाणपत्र

बैतूल। स्विमिंग के क्षेत्र में भी अब बैतूल की प्रतिभाएं निखरकर सामने आ रही हैं। बैतूल जिला तैराकी विकास उत्थान समिति के अध्यक्ष राजा साहू ने जानकारी देते हुए बताया कि वीर सावरकर स्विमिंग पूल के सदस्य रोशन सूर्यवंशी ने 19 अप्रैल को भोपाल के बड़े तालाब में आयोजित ओपन वाटर स्विमिंग प्रतियोगिता में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में उन्होंने 5 किलोमीटर (5000 मीटर) की दूरी 2 घंटे 40 मिनट में लगातार तैरकर पूरी की। इस उत्कृष्ट प्रदर्शन पर आयोजन समिति द्वारा रोशन सूर्यवंशी को मेडल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। बैतूल स्विमिंग टीम की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी गई।इस अवसर पर स्विमिंग कोच गज्जू यादव सहित टीम के सदस्य अखिलेश बारंगे, संदीप यादव, पम्मी शुक्ला, राजकुमार दीवान, पराग भाई, राजा साहू और रघुनाथ यादव उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि स्व. विजय कुमार खंडेलवाल (बाबूजी) और पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष आनंद प्रजापति के प्रयासों से बैतूल को वीर सावरकर तरण ताल की सौगात मिली थी। वहीं बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के संरक्षण और सहयोग से तैराकी समिति के आग्रह पर तरण ताल को कवर्ड शेड की सुविधा प्रदान की गई। इसके अलावा नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर के भी संरक्षक होने के कारण आज बैतूल के खिलाड़ी तैराकी के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा को निखार रहे हैं और जिले का नाम रोशन कर रहे हैं।

जिला अधिवक्ता संघ बैतूल ने न्यायालय परिसर में लगाया हृदय रोग जांच शिविर

बैतूल। जिला अधिवक्ता संघ बैतूल द्वारा 21 अप्रैल को न्यायालय परिसर बैतूल स्थित पुस्तकालय भवन में हृदय रोग जांच हेतु एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। यह निशुल्क जांच शिविर नोबल मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल एवं कार्डियक सेंटर भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया, जिसमें जिले के न्यायाधीशगण, अधिवक्ता एवं न्यायालयीन कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश दिनेश चंद्र थपलियाल ने किया। उनके साथ विशेष न्यायाधीश श्रीमती दिव्यांगना जोशी पांडे, कुटुंब न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश शिव बालक साहू, जिला अधिवक्ता संघ बैतूल के अध्यक्ष संजय कुमार मिश्रा, अन्य न्यायाधीशगण, वरिष्ठ अधिवक्तागण एवं न्यायालयीन कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

इस अवसर पर न्यायालय परिसर में स्वास्थ्य जागरूकता का सकारात्मक वातावरण देखने को मिला। जांच शिविर के बारे में जानकारी देते हुए जिलाअधिवक्ता संघ के सहसचिव एडवोकेट कलश दीक्षित ने बताया कि इस शिविर में नोबल मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल भोपाल की टीम द्वारा हृदय रोग से जुड़ी जांच जैसे ब्लड प्रेशर, शुगर, ईसीजी, और इको की जांच पूर्णत- निःशुल्क की गई। लगभग 200 से अधिक लोगों की जांच की गई, जिनमें न्यायाधीश, अधिवक्ता और न्यायालयीन कर्मचारी शामिल रहे।

जांच के साथ प्रत्येक व्यक्ति को दिया उचित चिकित्सकीय परामर्श

भोपाल से आई चिकित्सकों की टीम में डॉ सतीश रामटेके, डॉ अनुराग, डॉ निखिल महाजन सहित उनके स्टाफ के सदस्य उपस्थित रहे। इन सभी ने जांच के साथ प्रत्येक व्यक्ति को उचित चिकित्सकीय परामर्श भी प्रदान किया। कार्यक्रम में पधारे समस्त डॉक्टरों एवं स्वास्थ्य कर्मियों का स्वागत जिला अधिवक्ता संघ द्वारा किया गया।

झोत वाले दादा धाम तारमखेड़ा : आस्था और चमत्कारिक जलधारा का केंद्र

बैतूल/भौरा। शाहपुर जनपद की ग्राम पंचायत झापड़ी के छोटे से गांव तारमखेड़ा में स्थित झोत वाले दादा धाम हजारों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बना हुआ है। बैतूल और नर्मदापुरम जिले के लोग यहां बड़ी श्रद्धा के साथ पहुंचते हैं। यह स्थान अपने धार्मिक और चमत्कारिक महत्व के कारण विशेष पहचान रखता है। झोत वाले दादा धाम में सबसे अनूठी बात यह है कि मंदिर परिसर में दो स्थानों से जलधारा फूटती है, जिसे श्रद्धालु मां ताप्ती का जल मानते हैं। यह जलधारा सालों से अनवरत प्रवाहित हो रही है और स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, यह जल किसी भी प्रकार के कष्टों को दूर करने वाला और रोगों से मुक्ति दिलाने वाला माना जाता है। श्रद्धालु यहां से जल भरकर अपने घरों में ले जाते हैं और इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। इस धाम में भगवान हनुमान की एक अत्यंत प्राचीन मूर्ति स्थापित है, जिसे लेकर कहा जाता है कि यह स्वयंभू मूर्ति है और इसका आध्यात्मिक प्रभाव अत्यंत शक्तिशाली है। पुराने समय में झोत वाले दादा एक छोटी सी झोपड़ी में विराजित थे, लेकिन भक्तों की आस्था और समर्पण ने इसे भव्य स्वरूप प्रदान किया। स्थानीय श्रद्धालुओं के सहयोग से एक सुंदर मंदिर का निर्माण किया

गया, जो अब भक्तों के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र बन चुका है। झोत वाले दादा धाम में हर वर्ष अनेक धार्मिक और सामाजिक आयोजन किए जाते हैं। इनमें सबसे प्रमुख विशाल श्रीराम कथा और यज्ञ है, जिसमें हजारों श्रद्धालु दूर-दूर से आकर शामिल होते हैं। कथा और यज्ञ के समापन पर विशाल भंडारे का आयोजन भी होता है, जिसमें श्रद्धालु प्रेम और भक्ति भाव से प्रसाद ग्रहण करते हैं।

साधु-संतों का जमावड़ा और दिव्य वातावरण

धाम की महिमा केवल स्थानीय श्रद्धालुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि अनेक साधु-संत और कथा वाचक भी यहां आते रहते हैं। धार्मिक आयोजनों के दौरान यहां का वातावरण पूरी तरह मंत्रों के उच्चारण और भक्ति संगीत से गूंज उठता है, जिससे श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति और दिव्य अनुभूति प्राप्त होती है। गांव के रामकृष्ण यादव का कहना है कि झोत वाले दादा की कृपा से गांव में कई चमत्कार देखने को मिले हैं। श्रद्धालु विशालसिंह ठाकुर,महेंद्र सिरोठिया,मोंटू जोगी,बताते हैं कि जो भी सच्चे मन से यहां मन्नत मांगता है, उसकी हर इच्छा पूरी होती है। यही कारण है कि इस धाम का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है और यहां आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या हर साल बढ़ रही है।

प्राकृतिक सुंदरता और पर्यटन की संभावनाएं

धार्मिक महत्व के साथ-साथ झोत वाले दादा धाम प्राकृतिक सुंदरता से भी परिपूर्ण है। हरे-भरे पेड़-पौधों और शांत वातावरण के बीच स्थित यह स्थान मानसिक शांति प्रदान करता है। अगर इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाए तो यह धार्मिक पर्यटन के मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान बना सकता है। हालांकि, बढ़ती श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए यहां बुनियादी सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकता महसूस की जा रही है। विश्राम स्थल, सडक़ और अन्य सुविधाओं का विकास होने से अधिक से अधिक श्रद्धालु यहां आकर आध्यात्मिक लाभ ले सकेंगे। भविष्य में यदि यहां की सुविधाओं का विस्तार किया जाए, तो यह स्थान पूरे प्रदेश में प्रसिद्ध धार्मिक स्थल के रूप में उभर सकता है।

बांधवगढ़ में बाघ ने किया हमला, ग्रामीण घायल

टाइगर रिजर्व के कोर एरिया की घटना अप्रैल में तीसरा मामला

उमरिया (नप्र)। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के कोर एरिया में बाघ हमले की एक और घटना सामने आई है। कुसमाहा गांव के निवासी राजबली बैगा को बाघ ने हमला कर घायल कर दिया। घटना सोमवार को उस समय हुई, जब राजबली अपने घर से कोठिया गांव जा रहे थे। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में अप्रैल महीने में बाघ हमले की तीसरी घटना है।राजबली ने बताया कि जंगल में बाघ को देखकर वह भागने लगे। इसी दौरान बाघ ने उनके पैर को पकड़ लिया। गश्त कर रही बीटीआर की टीम तुरंत मौके पर पहुंची। टीम ने घायल राजबली को मानपुर अस्पताल में भर्ती कराया। वर्तमान में डॉक्टरों की टीम उनका इलाज कर रही है। परिक्षेत्र अधिकारी अर्पित मैराल के अनुसार बाघ की निगरानी की जा रही है। घायल राजबली के साथ बीटीआर की टीम भी मौजूद है।

आधुनिक शस्त्र निर्माण सुविधा का उद्घाटन

भोपाल। संयुक्त अरब अमीरात की प्रमुख शस्त्र निर्माता कंपनी काराकल और भारत की प्रमुख रक्षा कंपनी आईकॉम ने आधुनिक शस्त्र निर्माण सुविधा का उद्घाटन किया है। इस सुविधा के तहत काराकल के शस्त्रों का स्थानीय उत्पादन किया जाएगा, जिससे भारत की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी।हैदराबाद में स्थापित इस सुविधा में असॉल्ट

राइफल, स्नाइपर राइफल और पिस्तौल जैसे विभिन्न शस्त्रों का उत्पादन किया जाएगा। यह सुविधा भारत की आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा देने में मदद करेगी।काराकल और आईकॉम के बीच हुए समझौते के तहत काराकल अपनी प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता आईकॉम के साथ साझा करेगी, जिससे भारत में शस्त्र उत्पादन की क्षमता बढ़ेगी। इससे भारत की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी और देश की आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।इस सुविधा के उद्घाटन से भारत को अपनी रक्षा आवश्यकताओं के लिए विदेशी मुद्रा की बचत करने में भी मदद मिलेगी।

स्थापना दिवस के 150 वें वर्ष का प्रतीक चिन्ह का अनावरण

सुबह सवेरे सोहागपुर। मित्र कन्या शाला के शैक्षणिक विरासत के 150 वें वर्ष के अवसर पर प्रतीक चिन्ह का

अनावरण नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटैल, प्राचार्य संजीव शुक्ला, अनमोल आर्ट गैलरी संचालक देशना अभिषेक जैन , सिरेमिक आर्टिस्ट रूपाली जैन, वरिष्ठ प्रतिनिधि स्टेला मसीह की गरिमामय उपस्थिति में किया। इसी अवसर पर समर कैंप का भी शुभारंभ हुआ। उल्लेखनीय है कि मित्र कन्या शाला आज भी निर्धन बालिकाओं के लिए निशुल्क शिक्षा अभियान के माध्यम से उनके समग्र विकास के संकल्पित है । इसके पूर्व छात्राओं ने अतिथियों का स्वागत किया । अनावरण के उपरांत शाला प्राचार्य संजीव शुक्ला ने अपने उद्बोधन में कहा कि सन 1875 में भोपाल रियासत की तत्कालीन बेगम के आग्रह पर फ्रेंड्स फॉरेन मिशन एसोसिएशन के प्रतिनिधि चार्ल्स गायफार्ड एवं हैरियट मेंडर ने 11 बालिकाओं से निशुल्क शिक्षा के विजन के साथ इस अभियान की शुरुआत की थी ।जो आज भी समाज के सहयोग से सतत , समर्पित रूप से निर्धन बालिकाओं की शिक्षा के लिए कार्यरत है ।

शाला के गौरवशाली 150वर्ष ' विदेशी मित्र प्रतिनिधियों का सम्मेलन', शैक्षणिक व्याख्यान, पूर्व छात्र, छात्रा सम्मेलन आदि आयोजित होंगे । समर कैम्प के उद्घाटन में अंगदानी स्व अनमोल स्मृति आर्ट गैलरी संचालक देशना अभिषेक जैन ने छात्राओं को आर्ट एवं क्राफ्ट की बारीकियां समझाई। प्रतिभागियों प्रभारी सोनाली यादव, कृतिका यादव , खुश्बू साहू , प्रियांशी यादव एवं कंचन ठाकुर ने कैम्प के लिए विशेष रूप से तैयार किट वितरित की गई। इस अवसर पर शिक्षिका गुड़िया रघुवंशी, शहनाज खान, तनु आरसे, अफसाना शाह आदि शिक्षिकाएं उपस्थित थी । आभार प्रदर्शन शिक्षिका सुनीला मसीह ने किया ।

पहले दिन सीएमएचओ कार्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों ने समझे फायर सेफ्टी के उपाय

फायर सेफ्टी सप्ताह में अस्पतालों में आग से बचने के इंतजामों की होगी परख

भोपाल । अग्नि सुरक्षा जागरूकता के लिये फायर सेफ्टी सप्ताह का आयोजन जिले की समस्त शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में किया जा रहा है। सप्ताह के पहले दिन 21अप्रैल को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय भोपाल के अधिकारियों और कर्मचारियों को फायर सेफ्टी पर हैंड्सऑन ट्रेनिंग दी गई। जिसमें आग से बचाव के तरीकों, इलेक्ट्रिकल फायर सेफ्टी, आकस्मिक स्थितियों में निकासी के तरीकों पर जानकारी दी गई। 21 से 26 अप्रैल तक संचालित ये सप्ताह 'nite to Ignite, a Fire Safe India' की थीम पर मनाया जा रहा है।

ग्रीष्मकाल में तापमान के बढ़ने तथा एयर कंडीशनर , कूलर इत्यादि उपकरणों के अधिक उपयोग के कारण विद्युत प्रणाली पर अत्यधिक भार पड़ता है। इस कारण से अग्नि दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है । स्वास्थ्य संस्थानों में अग्नि सुरक्षा के प्रावधानों की निगरानी के संबंध में तैयारियों को लेकर फायर सेफ्टी सप्ताह के दौरान उच्च विद्युत भार वाले चिकित्सकीय एवं अन्य उपकरणों के रखरखाव, गहन चिकित्सा इकाई , नवजात शिशु देखभाल इकाई , ऑपरेशन थिएटर आदि ऑक्सीजन समृद्ध वातावरण में अग्नि एवं विद्युत सुरक्षा मानकों के पालन, फायर रिस्पांस प्लान्स की उपलब्धता, ज्वलनशील सामग्रियों का उचित संधारण एवं निपटान की परख की जा रही है।

बिस्तरीय क्षमता के अनुरूप फायर सेफ्टी सर्टिफिकेट, अग्नि सूचक तथा अग्निशमन यंत्रों की उपलब्धता के साथ-साथ उन्हें संचालित करने हेतु

यूजर मैन्युअल की उपलब्धता , फायर रिस्पांस प्लान, अस्पताल कर्मचारियों व चिकित्सकों को अग्नि सुरक्षा एवं आपातकालीन स्थिति में उपकरणों के उपयोग तथा कोड रेड ऑल क्लियर के दौरान अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं के पालन हेतु उन्मुखीकरण किया जा रहा है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय द्वारा सभी स्वास्थ्य संस्थानों को फायर सेफ्टी से संबंधित व्यवस्थाओं की समीक्षा करने के निर्देश दिए गए हैं । स्वास्थ्य संस्थानों में कार्यरत कर्मचारियों एवं चिकित्सकों को अग्नि सुरक्षा एवं आपातकाल स्थिति में अग्नि सुरक्षा उपकरणों के उपयोग के लिए प्रशिक्षण,मॉक ड्रिल , फायर सेफ्टी सम्बन्धी दस्तावेजों का भौतिक निरीक्षण किया जा रहा है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ प्रभाकर तिवारी ने बताया कि अग्नि से सुरक्षा के प्रावधानों को सुनिश्चित करने के लिए सभी अस्पतालों के कर्मचारी एवं चिकित्सकों को इसकी मानक प्रक्रियाओं के संबंध में उन्मुखीकरण करवाया जा रहा है। सभी अस्पतालों को नगर निगम एवं जिले के विद्युत सुरक्षा अधिकारी से समन्वय कर फायर सेफ्टी को सुनिश्चित करवाया जा रहा है।

कंटेनर से टकराई स्कॉर्पियो चार दोस्तों की मौत

उज्जैन के 7 लोग सांवरिया सेठ दर्शन करने जा रहे थे, नीमच-राजस्थान बॉर्डर पर हादसा

जावद (नप्र)। नीमच-नसीराबाद हाईवे पर एक कंटेनर से स्कॉर्पियो टकरा गई। इसमें चार लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन लोग घायल हो गए। हादसा इतना भयावह था कि गाड़ी के परखच्चे उड़ गए। हादसा मध्यप्रदेश-राजस्थान की सीमा पर रविवार रात करीब 11 बजे हुआ। सभी लोग उज्जैन के रहने वाले हैं। इनकी उम्र 18 से 27 साल के बीच है। ये लोग सांवरिया सेठ दर्शन करने जा रहे थे।पुलिस के मुताबिक उज्जैन जिले के इंगोरिया गांव के रहने वाले सात लोग स्कॉर्पियो से सांवरिया सेठ दर्शन के लिए निकले थे। रात करीब 11 बजे वे नीमच जिले के नयागांव से कुछ दूर चित्तौड़गढ़ के निम्बाहेड़ा कोतवाली क्षेत्र में पहुंचे। यहां बांगरेड़ मामादेव गांव के पास तेज रफ्तार गाड़ी सड़क के दूसरी लेन में सामने से आ रहे कंटेनर में जा घुसी।

रंजिश में युवक पर जानलेवा हमला

तीन आरोपी फरार, अशोका गार्डन इलाके की घटना

भोपाल (नप्र)। शहर में चाकूबाजी की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। अशोका गार्डन थाना क्षेत्र में एक बार फिर आपसी रंजिश का मामला हिंसा में तब्दील हो गया। तीन बदमाशों ने मिलकर एक युवक पर चाकू से हमला कर दिया। युवक को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। थाना प्रभारी हेमंत श्रीवास्तव ने बताया कि घायल युवक सोहेल मेवाती की शिकायत पर पुलिस ने आकिब, अमन बच्चा और अन्नू बच्चा के खिलाफ आईपीसी की संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया है। प्रारंभिक जांच में यह सामने आया है कि फरियादी और आरोपी पहले ऐशबाग इलाके में साथ रहते थे और आपस में लेनदेन को लेकर पुराना विवाद चल रहा था। शनिवार को इसी रंजिश को लेकर कहासुनी हुई, जो देखते ही देखते हिंसक रूप ले गई। आरोप है कि आकिब, अमन और अन्नू ने मिलकर सोहेल की कलाई और माथे पर चाकू से वार किए और मौके से फरार हो गए। आसपास के लोगों ने घायल को आनन-फानन में अस्पताल पहुंचाया, जहां उसकी हालत अब स्थिर बताई जा रही है।

थ्री-डी प्रिंटिंग और मॉडलिंग के माध्यम से भविष्य की चिकित्सा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान द्वारा थ्री-डी प्रिंटिंग एवं मॉडलिंग इन हेल्थकेयर विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन एम्स भोपाल की कम्प्यूटेशनल थ्री-डी मॉडलिंग एवं बायोमैकेनिक्स लैब द्वारा किया गया। चिकित्सा के क्षेत्र में थ्री-डी मॉडलिंग के अनेक लाभ हैं—यह सर्जनों को अत्यधिक सटीकता के साथ सर्जरी की योजना बनाने और अभ्यास करने में सक्षम बनाती है, जिससे ऑपरेशन का समय कम होता है और जटिलताओं की संभावनाएं घटती हैं। इसके माध्यम से मरीजों और उनके परिजनों को जटिल बीमारियों और चिकित्सा प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझाया जा सकता है। यह तकनीक मेडिकल छात्रों के लिए शारीरिक संरचनाओं और सर्जिकल तकनीकों को व्यावहारिक रूप से समझाने में सहायक होती है। साथ ही, दुर्लभ मामलों को डिजिटल मॉडल के रूप में संरक्षित कर शैक्षणिक और शोध उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। यह लैब मरीज-विशिष्ट मॉडलिंग, वर्चुअल रियलिटी सिमुलेशन, बायोमैकेनिक्स शोध और रेयर केस पैथोलॉजी म्यूज़ियम जैसी महत्वपूर्ण पहलों में अग्रणी भूमिका निभाएगी।

इस संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो. (डॉ.) अजय सिंह द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व और समर्थन से इस अत्याधुनिक प्रयोगशाला की आधारशिला रखी गई। मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में प्रो. सिंह ने कहा, यह संगोष्ठी नवाचार और अनुसंधान-आधारित स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। थ्री-डी प्रिंटिंग और मॉडलिंग न केवल सर्जिकल प्लानिंग और मेडिकल शिक्षा में क्रांति ला रही है, बल्कि यह व्यक्तिगत और सटीक उपचार की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। मैं इस प्रभावशाली पहल के लिए आयोजन समिति को बधाई देता हूँ और शैक्षणिक संस्थानों से आग्रह करता हूँ कि वे इस विषय को चिकित्सा पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करें ताकि जटिलताओं की रोकथाम की जा सके और चिकित्सा गुणवत्ता को और बेहतर बनाया जा सके।

इस तेजी से उभरते क्षेत्र में क्षमता निर्माण के उद्देश्य से लैब द्वारा जुलाई 2025 से दो संरचित प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम आरंभ किए जा रहे हैं, जो मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट), भोपाल के सहयोग से संचालित होंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में डॉ. अजीत कुमार (उप निदेशक प्रशासन), प्रो. (डॉ.) शशांक पुरवार (चिकित्सा अधीक्षक), प्रो. (डॉ.) रजनीश जोशी (डीन एकेडमिक्स) और प्रो. (डॉ.) रेहान उल हक (डीन रिसर्च) की गरिमामयी उपस्थिति रही। भारत और विदेश से आए विशेषज्ञों जैसे एम्स नई दिल्ली की न्यूरोइंजीनियरिंग लैब के वैज्ञानिक डॉ. रमणदीप सिंह तथा स्ट्रैटासिस (इज़राइल) के डेंटल डिवीजन के प्रमुख श्री रॉन एलेनबोगन ने चिकित्सा नवाचार के भविष्य पर अपने विविध दृष्टिकोण साझा किए।

श्री एलेनबोगन ने औद्योगिक स्तर पर बायोप्रिंटिंग और उसके नैदानिक उपयोगों पर व्याख्यान दिया, जबकि लैब की संयोजक डॉ. सुनीता अठावले ने लैब की स्थापना, इसके विकास तथा मेडिकल एजुकेशन, वर्चुअल रियलिटी सिमुलेशन, मरीज-विशिष्ट मॉडलिंग, बायोमैकेनिक्स और रेयर केस पैथोलॉजी म्यूज़ियम की दिशा में किए गए कार्यों को साझा किया। संगोष्ठी की शुरुआत में डॉ. रेखा लालवानी (सह-संयोजक) ने स्वागत भाषण और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की, जबकि डॉ. शीतल कोटगिरवार (सह-संयोजक) ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया। यह संगोष्ठी एम्स भोपाल की नवाचार और आधुनिक चिकित्सा में उत्कृष्टता की दिशा में प्रतिबद्धता को दर्शाने वाला एक और महत्वपूर्ण कदम है।

जिले के स्कूलों में एनसीईआरटी की पुस्तकें लागू करने को लेकर ज्ञापन

सुबह सवेरे सोहागपुर। जिले के कुछ निजी स्कूलों में एनसीईआरटी की पुस्तकें से हटकर अन्य पुस्तकें चलाई जा रही हैं जिनकी कीमत तुलनात्मक रूप से अत्यधिक है। समस्त अभिभावक इस स्तिथि में नही हैं ।कि इतनी महंगी पुस्तकें अपने बच्चों को दिला सकें। इस संबंध में आज सोमवार को अनुविभागीय अधिकारी अनिल जैन को अभिभावक एसोसिएशन सोहागपुर ने कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा।इस ज्ञापन में आग्रह किया गया है कि नर्मदापुरम जिला किसानी क्षेत्र होने के चलते यहां किसानों एवं मजदूरों की संख्या अधिक है। अतएव आपसे आग्रह है इन सभी का ध्यान रखते हुए निजी स्कूलों की मनमानी पर रोक लगाते हुए जिले के समस्त स्कूलों में एनसीईआरटी की पुस्तकें ही चलाई जाएं। आपके इस निर्णय से बहुत भारी भरकम स्कूल फीस भर रहे अभिभावकों को बड़ी राहत प्राप्त होगी। ऐसा भी संज्ञान में आया है ।कि इस प्रकार के आदेश प्रदेश के कुछ जिलों में दिये गए हैं। जिसकी प्रति संलग्न है। कलेक्टर महोदया जी अभिभावक एसोसिएशन सोहागपुर के तत्वावधान में कोरोना काल के पश्चात 2022-23 में ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित सोहागपुर के सेंट पैट्रिक स्कूल के अत्यधिक फीस वृद्धि के विरुद्ध 8 माह लम्बा सफल आंदोलन चलाया था।

सीएम से केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री मुरुगन ने की सौजन्य भेंट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय कार्य राज्यमंत्री श्री एल. मुरुगन ने सोमावार को मंत्रालय में सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुष्प-गुच्छ भेंट कर एवं अंग वस्त्रम ओढ़ाकर केंद्रीय मंत्री श्री मुरुगन का स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव और केंद्रीय राज्य मंत्री श्री मुरुगन ने मध्यप्रदेश के विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर गहन चर्चा की।

डां भीमराव अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में वक्ताओं ने विचार रखे

सुबह सवेरे सोहागपुर । मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के तत्वावधान में जनपद पंचायत सभागार में डाक्टर भीमराव अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में वक्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे।इस अवसर पर संभाग,जिला समन्वयक कौशलेश तिवारी,पवन सहगल, जनपद उपाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह रघुवंशी, समाजसेवी विशाल गोलानी,चेनसिंह, वकील शिवकुमार पटैल, पत्रकार मुकेश अवस्थी, असिस्टेंट प्रोफेसर मनमोहन चंद्रवंशी आदि मंचासीन थे। इस अवसर पर कौशलेश तिवारी ने कहा कि डॉ भीमराव अम्बेडकर को लेकर दो पक्षों में से एक पक्ष ने डॉ भीमराव अम्बेडकर का नाम का सहारा लेकर हिन्दूओं को भड़काने का प्रयास किया जा रहा है। यह कदापि देश के हित में नहीं है। हमें एक कुत्सित मानसिकता से सतर्क रहने की आवश्यकता है। समाजसेवी विशाल गोलानी ने अपने विचार रखते कहा कि 28 डिग्रीयां होने से बाबा साहब को देश का प्रथम कानून मंत्री बनाया गया ।अन्यथा कांग्रेस पार्टी उनको मंत्रिमंडल में लेना ही नही चाहती थी । भीमराव अम्बेडकर ने भेदभाव सहा है तभी उन्होंने

नाराज़गी व्यक्त की।इसका उदाहरण 1952 के प्रथम आम चुनाव में देखने को मिला ।

जब कांग्रेस ने बाबा साहब के विरुद्ध उनके ही निजी सचिव को चुनाव में उतारवाकर बाबा साहब को हरवाने का कार्य किया। फिर 1954 के उपचुनाव में पुनः कांग्रेस ने बाबा साहेब अम्बेडकर के विरुद्ध अपना प्रत्याशी उतारकर उनको हरवाने का कार्य किया । जबकि उनके ब्राह्मण शिक्षक ने उनको अपना उपनाम दिया । बड़ौदा महाराज की दी हुई छात्रवृत्ति से ही उन्होंने अपनी स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट की डिग्री विदेश से हासिल की। साथ ही उनको अपनी सेना का सचिव भी नियुक्त किया। अपनी कुशाग्र बुद्धि , अपने शिक्षकों एवं बड़ोदा के महाराज की वजह से न सिर्फ उच्च शिक्षा प्रताप की बल्कि समाज को देखने का नया दृष्टिकोण भी दिया ।

आपने अपने विस्तृत उद्बोधन के अंत में आव्हान किया कि बाबा भीमराव अम्बेडकर साहब की तरह आप सभी समाज एवं देश के हित में सक्रिय रूप से कार्य करें।

कार्यक्रम को जनपद उपाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह रघुवंशी,चेनसिंह, पत्रकार मुकेश अवस्थी, पवन सहगल आदि ने संबोधित करते देश? की निति , भारत के संविधान पर उनके द्वारा चलाये गए जातिवाद को समाप्त करने पर अपने अपने विचार रखे। इसके पूर्व मुख्यमंत्री नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें करीबन 120 छात्र छात्राओं ने अपनी सहभागिता निभाई। उक्त कार्यक्रम विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था।

दतिया के निचलौरी जंगल में 200 बीघा इलाका जला

वन विभाग-ग्रामीणों ने मिलकर 150 बीघा में लगी आग पर काबू पाया, एक झुलसा

दतिया (नप्र)। दतिया के निचलौरी जंगल में सोमवार के दिन भीषण आग लग गई। आग की लपटें इतनी तेज हैं कि 5 किलोमीटर दूर रेलवे स्टेशन के पुल से भी दिखाई दे रही हैं। जंगल के पास स्थित रामसागर और गोविंद नगर गांव के लिए खतरा बन गई आग निचलौरी गांव तक पहुंच गई। सूचना मिलते ही वन कर्मी और ग्रामीण मौके पर पहुंचे। वन विभाग के कर्मचारी ग्रामीणों की मदद से आग बुझाने में जुटे हैं। ग्रामीण भरत यादव के अनुसार, आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। आशंका है कि सड़क से गुजरते किसी राहगीर द्वारा फेंकी गई सिगरेट या बीड़ी से आग लगी होगी। आग ने करीब 200 बीघा से अधिक जंगल को जलाकर राख कर दिया है।

डेढ़ सौ बीघा से अधिक क्षेत्र में आग पर काबू पाया

वन कर्मियों और ग्रामीणों के संयुक्त प्रयास से डेढ़ सौ बीघा से अधिक क्षेत्र में आग पर काबू पा लिया गया है। इस दौरान एक ग्रामीण झुलस गया। वन मंडल की एसडीओ प्रति शाक्य ने बताया कि आग पर पूरी तरह काबू पाने के प्रयास जारी हैं। दमकल की टीम को भी सूचना दी गई है। ग्रामीणों का आरोप है कि शाम 4 बजे तक कोई भी फायर ब्रिगेड टीम मौके पर नहीं पहुंची।

बाल अस्थि रोगों पर आयोजन, नवोदित चिकित्सकों के ज्ञान एवं कौशल को सुदृढ़ करने की दिशा में एक पहल

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में अस्थि रोग विभाग द्वारा मध्य प्रदेश चैप्टर ऑफ इंडियन ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन, भोपाल ऑर्थोपेडिक सर्जन्स सोसायटी तथा एसोसिएशन ऑफ पीडियाट्रिक ऑर्थोपेडिक सर्जन्स के सहयोग से बाल अस्थि रोगों पर केन्द्रित एक सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य दिन-प्रतिदिन की बाल अस्थि रोग संबंधी जटिलताओं पर चर्चा कर उभरते चिकित्सकों को आवश्यक जानकारी और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था।

इस सीएमई में भोपाल एवं इसके आसपास के क्षेत्रों से 92 पंजीकृत प्रतिनिधियों सहित कई अस्थि रोग विशेषज्ञों ने भाग लिया। देशभर से आमंत्रित अतिथि विशेषज्ञों ने अपने अनुभव साझा किए और सहभागियों के साथ संवादात्मक सत्रों एवं प्रत्यक्ष प्रदर्शन के माध्यम से प्रशिक्षण दिया।

इस अवसर पर प्रोफेसर (डॉ.) अजय सिंह ने प्रतिनिधियों और संकाय को संबोधित करते हुए युवा चिकित्सा पेशेवरों में नैदानिक कुशाग्रता और करुणा को मजबूत करने में ऐसे शैक्षणिक मंचों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा- यह अत्यंत आवश्यक है कि हम नई पीढ़ी के ऑर्थोपेडिक चिकित्सकों को केवल नैदानिक कौशल ही नहीं, बल्कि संवाद और करुणा जैसे मूलभूत गुण भी सिखाएं। एम्स भोपाल द्वारा लंबे समय से विशेषीकृत बाल अस्थि रोग सेवाएं प्रदान की जा रही हैं और हम बच्चों की अस्थि स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में जनहितकारी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

यह सीएमई हमारे शैक्षणिक और नैदानिक पारिस्थितिकी तंत्र को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बेहतर शिक्षण हेतु, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संस्थानों के बीच तथा अनुभवी विशेषज्ञों के बीच छात्र आदान-प्रदान कार्यक्रमों की आवश्यकता है। बाल चिकित्सा रोगियों के प्रबंधन के लिए एक बहु-विषयक, समग्र दृष्टिकोण ही आगे बढ़ने का रास्ता है।

इस कार्यक्रम के दौरान प्लास्टर कास्ट लगाने की तकनीकों पर आधारित व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए, जिनमें विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न कास्टिंग तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। साथ ही, पीजी छात्रों के लिए एक रोचक क्विज का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

॥ मंदिरम् ॥

89

अंबरनाथ का शिव मंदिर

अंबरनाथ का शिव मंदिर 11 वीं सदी का एक ऐतिहासिक हिंदू मंदिर है, जो भारत के महाराष्ट्र में मुंबई के पास अंबरनाथ में आज भी पूजा जाता है। इसे अंब्रेश्वर शिव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, और स्थानीय रूप से पुरातन शिवालय के रूप में जाना जाता है। यह अंबरनाथ रेलवे स्टेशन (पूर्व) से 2 किमी दूर (वालधुनी) नदी के तट पर स्थित है। मंदिर का निर्माण 1060 ईस्वी में किया गया था जिसे पत्थरों पर खूबसूरती से उकेरा गया है। इसे संभवत: शिलाहारा राजा चित्तराज ने बनवाया था, इसका पुनर्निर्माण भी उनके पुत्र मुमुनि ने कराया होगा। असामान्य रूप से, अभयारण्य या गर्भगृह जमीन के नीचे है, मंडप से लगभग 20 सीढ़ियां उतरकर पहुंचा जा सकता है और यह आसमान की ओर खुला है क्योंकि ऊपर का शिखर टॉवर मंडप की ऊंचाई से थोड़ा ऊपर अचानक रुक जाता है, और जाहिर तौर पर यह कभी पूरा नहीं हुआ। यह भूमिजा रूप में है, और यदि पूरा हो जाता तो यह उदयेश्वर मंदिर के करीब होता, जिसे मध्य प्रदेश के उदयपुर में नीलकंठेश्वर मंदिर भी कहा जाता है, जिसकी शुरुआत 1059 में हुई थी, और सिन्नर में गोंडेश्वर मंदिर. जो बनाया गया था उससे यह स्पष्ट है किशिखर ने गवाक्ष के चार कोने वाले बैंडों का अनुसरण किया होगा – मधुकोश टॉवर की पूरी ऊंचाई तक निर्बाध रूप से फैल रहा है, जबकि प्रत्येक चेहरे के बीच में अलग-अलग पोडिया पर पांच स्पाइरलेट की पंक्तियां हैं।

महंगे शौक के लिए बने लुटेरे

8 लाख के मोबाइल-लैपटॉप जब्त, वारदात की योजना बनाते दो गिरफ्तार, दो फरार

भोपाल (नप्र)। भोपाल की गोविंदपुरा पुलिस ने मोबाइल झपटमार गैंग का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 25 कीमती मोबाइल फोन बरामद किए हैं। इनकी कुल कीमत करीब 8 लाख रुपए आंकी गई है। सभी मोबाइल शहर के अलग-अलग थाना क्षेत्रों से चोरी और झपटमारी की वारदातों में लूटे गए थे। पकड़े गए बदमाशों ने खुलासा किया है कि वे महंगे शौक पूरे करने के लिए इस तरह की वारदातों को अंजाम देते थे। गैंग के अन्य दो सदस्य अभी फरार हैं, जिनकी तलाश जारी है।

बीएचईएल रेलवे पटरी के पास बना रहे थे लूट की योजना

डीसीपी संजय अग्रवाल ने बताया कि हाल ही में गोविंदपुरा क्षेत्र समेत शहर के अन्य इलाकों में मोबाइल झपटने की घटनाएं बढ़ गई थीं। इस पर पुलिस टीम लगातार सक्रिय थी। मुखबिर से सूचना मिली कि दो संदिग्ध युवक बीएचईएल रेलवे पटरी के पास किसी वारदात की योजना बना रहे हैं।

पुलिस टीम ने घेराबंदी कर आरोपियों सोहेल खान (21) पुत्र नसीम खान निवासी दुर्गा नगर, एमपी नगर और नदीम

खान (19) पुत्र वाहिद खान निवासी काजीकैंप को मौके से हिरासत में लिया। थाने लाकर पूछताछ करने पर दोनों ने अब तक 25 मोबाइल फोन झपटने और चोरी करने की बात स्वीकार की।

इन वारदातों में उपयोग की गई एक पल्सर मोटरसाइकिल भी जब्त की गई है। पूछताछ में दोनों ने बताया कि गिरोह में सिराज और आहद खान नामक दो और साथी भी शामिल हैं, जो फिलहाल फरार हैं।

ईरानी डेरे में बिकते थे लूटे गए मोबाइल

आरोपियों ने खुलासा किया कि झपटे गए मोबाइल फोन सिराज के एक परिचित के जरिए 6 नंबर स्टेशन क्षेत्र स्थित ईरानी डेरे के पास रहने वाले एक व्यक्ति को बेचते थे। पुलिस अब उस व्यक्ति की तलाश और आरोपियों द्वारा बताई गई जानकारी की तस्दीक कर रही है।

पिस्टल-कारतूस के साथ बदमाश गिरफ्तार

इसी थाना क्षेत्र में रविवार रात गोविंदपुरा पुलिस ने एक और बड़ी कार्रवाई की। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने शुक्रवारा मार्केट क्षेत्र से मोहम्मद यूसुफ (20) पिता मोहम्मद साबिर, निवासी चिकलोद रोड, जहांगीराबाद को गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से एक पिस्टल और एक जिंदा कारतूस बरामद हुआ है। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है।

भोपाल में देर रात मिले लापता भाई-बहन

बेगमगंज से सगाई कार्यक्रम में आए थे, नानी से नाराज होकर घर के लिए निकले थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में खेलते-खेलते लापता हुए दो मासूम बच्चे देर रात आनंद नगर चौकी के पास मिल गए। 7 साल के लड़के और 3 साल की लड़की के लापता होने से हड़कंप मच गया था। परिजन ने काफी देर तक दोनों को ढूंढा, लेकिन उनका पता नहीं चल सका। इसके बाद परिजन थाने पहुंचे थे। मामला ऐशबाग थाना क्षेत्र में रविवार शाम 4 बजे का है। दोनों बच्चे नानी के साथ बेगमगंज से यहां सगाई कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी खंगाले। पुलिस ने पूरे शहर में नाकाबंदी कर आसपास के जिलों में भी अलर्ट जारी किया था। अपहरण की आशंका जताई जा रही थी।

लावारिस हालत में मिले बच्चे: इस बीच देर रात दोनों बच्चे आनंद नगर चौकी के पास लावारिस हालत में मिल गए। दोनों बच्चों को लेकर पुलिस जांच में नई जानकारी सामने आई। रहवासियों द्वारा सूचना दिए जाने के बाद पुलिस ने बच्चों

को अपनी सुरक्षा में लिया। प्रारंभिक पूछताछ में बड़े भाई ने बताया कि वे अपनी नानी से नाराज होकर रविवार रात को बेगमगंज की ओर निकल गए थे। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि वे आनंद नगर तक कैसे पहुंचे। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने पर पुलिस को पता चला है कि दोनों बच्चे बाग़ फरहत अफ़ज़ा से बाग़ उमराव दूल्हा गेट तक अकेले और पैदल चलते हुए देखे गए हैं। पुलिस ने बताया कि सोमवार को दोनों बच्चों की बाल कल्याण समिति के समक्ष पेशी होगी, जहां उनकी काउंसलिंग करवाई जाएगी। इस काउंसलिंग के बाद यह स्पष्ट हो सकेगा कि बच्चे ऐशबाग से आनंद नगर तक कैसे पहुंचे और उनके साथ रास्ते में कोई घटना तो नहीं हुई।

सीसीटीवी खंगालती रही पुलिस: थाना प्रभारी वी.बी.एस. सिंगर ने दैनिक भास्कर को बताया कि, परिजन की शिकायत पर तत्काल बच्चों की तलाश शुरू कर दी गई। इलाके के हर संभावित स्थान पर टीम भेजी गई, लेकिन फिलहाल बच्चों का पता नहीं चल सका। घटनास्थल और आसपास के इलाकों में लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले गए, ताकि कोई सुराग मिल सके।

हर चौराहे पर की नाकाबंदी: पुलिस चौराहों और प्रमुख स्थानों पर बच्चों की तलाश करती रही। बच्चों के अपहरण की आशंका को भी जांच में शामिल किया गया।

सगाई कुंवारी लड़की से फेरे शादीशुदा से कराए

राजगढ़ में शादी के दूसरे दिन पता चला, 11 लाख में तय हुआ था संबंध, 5 गिरफ्तार

सारंगपुर (नप्र)। राजगढ़ में एक युवक के साथ शादी के नाम पर धोखा हो गया। सात फेरे लेने के अगले दिन उसने दुल्हन का घूंघट उठाया तो पता कि ये लड़की वो नहीं है, जिसे दिखाकर उसकी सगाई और फिर शादी तय की गई थी। दूल्हा पक्ष की शिकायत पर पुलिस ने जांच की तो पता चला कि लड़की पहले से ही शादीशुदा है। इस शादी का सौदा 11 लाख रुपए में तय हुआ था। इसमें से 5.75 लाख रुपए लड़की के पिता को दिए गए। बाकी की रकम 5 लाख 25 हजार रुपए कालू सिंह नाम के दलाल को दी गई। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ये मामला जिले के लीमा चौहान थाना क्षेत्र के गुड़नपुर गांव का है। यहां के रहने वाले कमल सिंह सोंधिया (उम्र 22 वर्ष) की शादी सुसनेर की रहने वाली लड़की से तय हुई थी। 14 अप्रैल को खिलचीपुर के लिम्बोदा गांव में सामूहिक विवाद सम्मेलन में शादी कराई गई थी।

जेवर और पैसा लेकर भागने की फिराक में थी दुल्हन: दूल्हे की ओर से पुलिस को बताया गया कि शादी के बाद सुहागरात पर जब वह कमरे गया तो दुल्हन किसी से फोन पर बात कर रही थी। वह कह रही थी कि घर वालों और कमल को नींद की गोलियां खिलाकर जेवर और पैसे लेकर भाग जाएगी। कमल ने अपनी नई नवेली दुल्हन की बातें सुनी तो उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। शक होने पर वह उसके पास गया और उसका घूंघट उठाया। दुल्हन का चेहरा देखकर वह हैरान रह गया। यह वह लड़की नहीं थी, जिसे दिखाकर उसकी सगाई की गई थी। पूछताछ में पता चला कि दुल्हन का नाम राधा नहीं, बल्कि सलोनी है। वह पहले से शादीशुदा है। परिजन ने 15 अप्रैल को पुलिस को मामले की शिकायत की।

इस तरह नकली शादी की साजिश रची: लीमा चौहान थाना प्रभारी अनिल राहोरिया ने बताया, इसमें मुख्य षड्यंत्रकारी मीडियेटर कालू सिंह और बालू सिंह है। इन्होंने सुसनेर निवासी जोरावर सिंह और उसकी पत्नी से मिलकर पहले उनकी बेटी को दिखाकर संबंध करवाया। फिर भोपाल निवासी शरीक खान नाम के व्यक्ति से लड़की का इंतजाम करने को कहा। शरीक ने खंडवा जिले के किल्लोद बिल्लोद तहसील हरसूद के रहने वाले पति-पत्नी से बात की, ये दंपती वर्तमान में इटारसी में रहते है। पति जितेंद्र गोंड की मिलीभगत से उसकी पत्नी सलोनी गोंड को दुल्हन बनाकर दूसरी शादी करवा दी।

प्रदेश में 23 शहर सबसे गर्म...पारा 40 डिग्री पार

पूर्वी हिस्से के शहरों में गर्मी बढ़ी, लू का असर, दिन के साथ रातें भी गर्म

भोपाल (नप्र)। भोपाल, इंदौर, उज्जैन और ग्वालियर-चंबल के साथ मध्यप्रदेश के पूर्वी हिस्से के शहरों में भी गर्मी बढ़ गई है। सीधी में पारा 44 डिग्री के पार पहुंच गया, जबकि 40 शहर ऐसे रहे, जहां तापमान 40 डिग्री या इससे अधिक रहा। यहां दिन के साथ रातें भी गर्म हो गई हैं। ऐसा ही मौसम सोमवार को भी था। मौसम विभाग ने प्रदेश के सभी जिलों में आसमान साफ होने का अनुमान जताया है। इससे पूरे प्रदेश में गर्मी का असर बढ़ा रहेगा। राजस्थान से जुड़े जिलों में गर्म हवाएं भी चल सकती है। हालांकि, मंगलवार से 10 से ज्यादा जिलों में लू का अलर्ट भी है।

इन शहरों में गर्मी के तीखे तेवर

प्रदेश के पश्चिमी और उत्तरी हिस्से यानी, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर और चंबल संभाग में अब तक तेज गर्मी का असर रहा है, लेकिन अब पूर्वी हिस्से यानी, सागर, सिंगरौली, रीवा, सीधी जैसे शहरों में भी गर्मी के तेवर तीखे हो गए हैं।रविवार को पूर्वी हिस्से के सीधी शहर में पारा 44.2 डिग्री दर्ज किया गया। यह प्रदेश में सबसे अधिक रहा। वहीं, टीकमगढ़ में 43.4 डिग्री, खजुराहो में 43.2 डिग्री दर्ज किया गया। इसी तरह शिवपुरी में 43 डिग्री, नौगांव-रीवा में 42.5 डिग्री, मंडला में 42.3 डिग्री और सतना में पारा 42 डिग्री रहा। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 40.6 डिग्री, इंदौर में 39.4 डिग्री, ग्वालियर में 41.2 डिग्री, उज्जैन में 39.2 डिग्री और जबलपुर में पारा 40.4 डिग्री दर्ज किया गया।

पारे में बढ़ोतरी का दौर रहेगा

मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव ने बताया कि अगले कुछ दिन तक पारे में बढ़ोतरी का दौर रहेगा। इस दौरान लू का अलर्ट भी जारी किया गया है।

एमपी नगर व गोविंदपुरा इलाके में मोबाइल झपटमार गैंग एक्टिव

एक ही दिन में 4 घटनाओं को दिया अंजाम, राह चलते लोगों से हो रही लूट

भोपाल (नप्र)। अगर आप एमपी नगर और आसपास के इलाकों में पैदल चलकर आते-जाते हैं, तो सतर्क हो जाइए। क्षेत्र में मोबाइल झपटमार गैंग एक बार फिर सक्रिय हो गया है। महज एक ही दिन में चार वारदातें सामने आई हैं, जिनमें राह चलते लोगों के हाथ से मोबाइल फोन झपट लिए गए। घटनाओं की एकरूपता और समय से साफ है कि यह कोई संगठित गिरोह है, जो सुनसान और चिह्नित जगहों को निशाना बना रहा है। पीड़ितों ने संबंधित थानों में रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस झपटमार गिरोह की तलाश में सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है और इलाके में गश्त भी बढ़ा दी गई है।

चारों वारदातें 18 अप्रैल को

अलग-अलग समय पर हुईं घटनाओं में से तीन गोविंदपुरा थाना क्षेत्र की हैं, जबकि एक एमपी नगर थाना क्षेत्र की है। सभी मामलों में बाइक सवार अज्ञात झपटमारों ने चलते राहगीरों से मोबाइल फोन छीन लिए और चंद सेकंड में रफूचक्कर हो गए। इन सभी मामलों में फरियादियों ने पुलिस थाना में इन सब मामलों की शिकायत की है।

जब सांसद को कार्यकर्ताओं ने याद दिलाई बीती बातें

भाजपा के एक सांसद महोदय ने कई महिनों से अपने पार्टी कार्यकर्ताओं के मोबाइल रिसीव करने में परहेज बरतना शुरू कर दिया है। कभी सांसद महोदय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाले कार्यकर्ता अब सांसद की बेरुखी से परेशान है।

मोहन का मंत्रालय

आशीष चौधरी

कार्यकर्ताओं का कहना है कि सांसद महोदय का व्यवहार ऐसा बदला की उन्होंने कार्यकर्ताओं के मोबाइल उठाना ही बंद कर दिया है। यदा कदा फोन उठ भी जाता है तो सांसद महोदय अपने पीए के माध्यम से कहलवा देते हैं कि सांसद जी ग्रामीण दौरे पर हैं। बीते दिनों एक कार्यक्रम में पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने सांसद महोदय को घेर लिया और कार्यकर्ताओं ने बीती यादें को याद दिलाया तो सांसद महोदय वहां से खिसक लिये। सांसद जी वहां से तत्काल इसलिए खिसके कि कार्यकर्ताओं ने सांसद को एक जिला पदाधिकारी की नियुक्ति की विरोध में भूमिका याद दिला दी तो सांसद ने कार्यकर्ताओं के हाथ जोड़ लिए। अब देखना है सांसद कार्यकर्ताओं के मोबाइल उठाते हैं या वही पुराना रवैया अपनाते हैं।

बिना कंप्यूटर ट्रेनिंग

मुख्य सचिव के महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट ई-आफिस का अभी मंत्रालय में पूरी तरह पालन नहीं हो पा रहा है वहीं इसको लेकर संभागों और जिलों में कवायद शुरू हो गई है। संभाग और जिलों में कर्मचारियों को ई ऑफिस के लिए बिना कंप्यूटर के ट्रेनिंग दी जा रही है। सूत्र बताते हैं कि कई जिलों में ई ऑफिस के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है वह भी बिना कंप्यूटर के, तो कर्मचारी ई ऑफिस कैसे सीखेंगे? जबलपुर में पिछले दिनों एक निर्माण विभाग के इंजीनियरों को ई ऑफिस की ट्रेनिंग दी गई। प्रशिक्षण ले रहे इंजीनियरों ने जब बिना कंप्यूटर ट्रेनिंग कैसे हो क्या मुद्दा उठाया तो उन्हें चुप करा दिया गया। यह मामला निर्माण विभाग के एचओडी तक पहुंच गया है।

नेता को शांत करने दी हवा

राजनीति में मुद्दे कभी दफन नहीं होते, सालों बाद भी गडे मुर्दे बाहर निकल आते हैं और राजनेता के लिए सर दर्द बन जाते हैं। ऐसा ही एक मामला इन दिनो राजनीति की फिजा में चर्चा का विषय बना हुआ है। बताया जाता है कि एक महत्वपूर्ण बिल का विरोध करने वाले कांग्रेस के प्रभावी नेता को शांत करने के लिए बरसों पुराना एक मामला फिर से खोल लिया गया है। हालांकि कोर्ट ने मामले की जांच की आदेश दिए हैं लेकिन राजनीतिक पंडितों का कहना है कि कांग्रेस के इस दिग्गज नेता को मैसेज देने के लिए बरसों पुराना मुद्दा फिर से जीवित कर लिया है और इस मुद्दे के माध्यम से भाजपा, कांग्रेस के नेता को काऊंटर करने की तैयारी में है। जांच एजेंसी जांच के नाम पर नेता को और उसके करीबियों को बयान आदि के लिए बुलाएगी मुद्दा गर्माए रखेगी ताकि कांग्रेस नेता हाल ही में पास हुए बिल पर ज्यादा मुखर ना हो और ना चुनावी प्रक्रिया को लेकर चिल्ला चोट मचाये।

अधिकारी का दबदबा

राज्य मंत्रालय में नवागत एक अखिल भारतीय सेवा के अधिकारी का दबदबा कर्मचारियों के लिए परेशानी का सबब बन रहा हैं। अधिकारी के मंत्रालय में प्रवेश करते ही सुरक्षा में तैनात अमला पूरी तरह अलर्ट हो जाता है और अधिकारी को फालो करते हुए उन्हें उनके कक्ष तक बिना बाधा के छोड़ता हैं। अधिकारी जब लिफ्ट का उपयोग करते हैं तो लिफ्ट में कोई अन्य नहीं होना चाहिए। इस दौरान मंत्रालय के कर्मचारियों की लिफ्ट में आवाजाही रोक दी जाती है। कर्मचारियों का कहना है कि ऐसा तो सीएस के मंत्रालय आने जाने पर भी नहीं होता है। सीएस और कई वरिष्ठ अधिकारी तो कई बार कर्मचारियों के साथ लिफ्ट का उपयोग कर लेते हैं। उन्हें कर्मचारियों से कोई परहेज नहीं हैं। कर्मचारियों का यह भी कहना है कि यह रूटीन ठीक नहीं हुआ तो कर्मचारी विरोध दर्ज कराने में पीछे नहीं रहेंगे।

अफसरों में बढ़ रहा चलन

राज्य शासन के अधिकारियों में इन दिनों संघ के अनुषांगिक संगठनों के कार्यालयों में जाने का चलन बढ़ रहा है। सूत्र बताते हैं कि करीब आधा दर्जन अधिकारी ने संघ के अनुषांगिक संगठनों के कार्यक्रमों में उपस्थिति दर्ज करायी है। इस उपस्थिति का दो पूर्व अफसरों को फायदा भी हुआ है और उन्हें सरकार ने नवाजा भी है। सत्ता शीर्ष से कभी जुड़े रहे एक अफसर ने हाल ही में उपस्थिति दर्ज कराकर सब को चौंका दिया।तो कुछ अफसर मौके की तलाश में है। मौके की तलाश उनको हैं जो अफसर लूप लाइन में हैं और शायद उन्हें लगता है कि संघ के अनुषांगिक संगठनोंके कार्यक्रम में आमद दो तो अच्छी पोस्टिंग का इनाम मिल जाए।